शब्द रंजन

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 2 | अंक 11 | उदयपुर गुरूवार 15 जून 2017 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

मोरिया आछो बोल्यो रे ढळती रात मा

-डॉ. महेन्द्र भानावत-

लोकजीवन में मोर के सम्बन्ध में सर्वाधिक रूप में जो कथन प्रचलित है वह तो यही कि मोर कभी भोग नहीं करता। नृत्य करते समय जब वह अश्रु-पात करता है तब ढेलड़ी (मयूरनी) उसे अपने मुंह में झेलती है। उससे वह जो गर्भ धारण करती है, मयूर पैदा होता है। मोर का वही आंसू जब धरती पर गिरता है तब मयूरनी उसे अपने उदर में डालती है। उससे मयूरनी पैदा होती है।

संसार के सभी जीवों में मोर सर्वाधिक मोहक, आकर्षक, सौंदर्यजीवी, पवित्र, संतोषी तथा संत प्रकृति का प्राणी कहा गया है। इससे अधिक समतावान स्वस्थ तथा सहिष्णु अन्य प्राणी नहीं मिलेगा। इसकी पहुंच सर्वत्र सर्व लोकों में है। लोकजीवन में इससे जुड़े अनेक कथा, किस्से, प्रहसन, संवाद, कहावतें, मिथक, घटनाएं, परचे, चर्चे तथा अवधारणाएं अनेक रूपों में इसके लौकिक-अलौकिक कथन का दरसाव देती हैं।

ख्यातनाम चित्रकार कमल शर्मा द्वारा चित्रित डॉ. कहानी भानावत की गृहशोभा बना मोहक मयूर

मोर की छोटी सी काया को ढकते लम्बे-लम्बे पंखों की रेशम सी मृदुल बुनावट और उसमें निहित हरे सुनहरे चटकीले नीले जैसी असंख्य रंगों वाली पारदर्शियां और नृत्य के समय उनके बनते अकल्पनीय चंदोवे ऐसे लगते हैं जैसे सारी पृथ्वी का रूप उसमें कैद हो गया है।

धरती पर इन्द्र का प्रतिनिधि है मोर जो तपित एवं प्यासी धरती को खुशहाल बनाने के लिए मेह का आह्वान करता है- 'मे हा ओ' अर्थात् मेह आओ। बरसो और जब मेह पूरे बरस जाते हैं तब 'जे हा ओ' अर्थात् जय हो कहकर उन्हें धन्यवाद अर्पित करता है।

ऐसे मोर के सम्बन्ध में पिछलेपचास-साठ वर्षों में मैंने सैकड़ों लोगों से शताधिक बातें सुनी हैं। सुनी ही नहीं, जो मौखिक कथन कंठासीन बन एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होता युगयुगीन बनता रहता है उसकी धड़कन को भी सुना है। बहुत सारी बातें तो मुझे अपनी मां से ही ममत्व के रूप में मिलीं। उसने अपनी मां यानी मेरी नानी से सुनीं। नानी को मैंने भी देखा जो मोरवण्या गोत्र की थीं।

कहतीं - हमारी गोत्र मोर से बनी। जिस जगह हमारे वंशज रहते वह क्षेत्र मोरों का आधिक्य लिये था। कालान्तर में वहां बस्ती बसी। वह जगह मोरवन कहलाई। उसमें रहने वाले मोरबन्या से मोरवण्या हो गये। ऐसे मोरवन नामक गांव मेवाड़ में और भी हैं। यहां ऐसे स्थल भी हैं जहां कभी चने की खास खेती होती थी। धीरे-धीरे वहां मोरों का आधिक्य होने लगा जिससे चने की सारी फसल मोरों का चुग्गा बन गई। बाद में वहां जो गांव बसा उसका नाम ही मोरचना हो गया जो आज भी अस्तित्व में है।

मांझल रात में जन्म धारण करनेवाले कीके के हर्षोल्लास का क्या कहना! सुखदेवी जच्चा ने वंशवृद्धि की है। नणदबाई अमर वधावा लेकर आई है। नाई हालर-हूलर सौभाग्यसूचक सुभागपड़ा ले बालजन्म की खबर नाना-नानी को देने पहुंचा है। लोहार-सुथार रूणझुण पालना बनाने की तैयारी में लग गये हैं। देवर अजमा लाने, बाईसा द्वारा उसे छज्जों पर सुखाने, देराणियों-जेठाणियों द्वारा उसे खांडने, सगुणी सास द्वारा उसके लड्डू बनाने तथा गृह-राजवी ससुर द्वारा नेग चुकाने की होड़ाहोड़ी में सब फूले नहीं समा रहे हैं।

पक्षी-जगत में भी खुशियों के मारे चहचहाट शुरू हो गई है। इनमें मोर ने सर्वाधिक रंग बिखेरे हैं। वह अपने सारे पंखों को फैलाकर अपनी बोली द्वारा न केवल धरती के प्राणियों को ही अपितु आकाश के दल-बादल को भी कूका के जन्म लेने का पैगाम पहुंचाता बावला बना लग रहा है। उड़ान भरते मयूर की खबर चारों ओर गूंजित होती है तभी मार्ग में एक नन्ही चिड़िया मिलती है। दोनों के बड़े ही दिलचस्प संवाद होते हैं। इस तरह-

चिड़िया - मोर्‌या रे मोर्‌या कठे चाल्यो ? (मोर ए मोर किधर चला ?)
मयूर - बागां में (बागों में)
चिड़िया - कई लेवा ? (क्या लेने ?)
मयूर - अजमो (अजवाइन)
चिड़िया - कणी मंगायो ? (किसने मंगवाया ?)
मयूर - नानी भाभी (छोटी भाभी ने)
चिड़िया - कई व्यो ? (क्या हुआ ?)
मयूर - कूकल्यो (कूका)
चिड़िया - नाम कई ? (नाम क्या ?)
मयूर - भग्ल्यो (भगल्या)

एक नन्ही चिड़िया का मोर से यह संवाद सार्थक और सकारात्मक है। मोर के पंख ज्ञान-संपदा को वर्धन देने वाले हैं। कृष्ण ने अपने मुकुट में मोर-पंख को वरण किया था। उनके मुकाबले अन्य कोई ज्ञानी, ध्यानी और सम्मानी नहीं हुआ। गीता और महाभारत साक्षी हैं। बचपन में हम लोगों ने कईबार मोर का पंख अपनी किताबों में रखा था। मां सब जानती थी तब से मोर-पंख का झाड़ू मेरे घर की शोभा बना हुआ है।

लोकजीवन में मोर के सम्बन्ध में सर्वाधिक रूप में जो कथन प्रचलित है वह तो यही कि मोर कभी भोग नहीं करता। नृत्य करते समय जब वह अश्रु-पात करता है तब ढेलड़ी (मयूरनी) उसे अपने मुंह में झेलती है। उससे वह जो गर्भ धारण करती है, मयूर पैदा होता है। मोर का वही आंसू जब धरती पर गिरता है तब मयूरनी उसे अपने उदर में डालती है। उससे मयूरनी पैदा होती है। मोर अनगिनत ज्ञान, गुण तथा संपदा का रहस्यमय खजाना है। इसी कारण वह हमारे देश का राष्ट्रीय पक्षी बना हुआ है।

बुलंद हौसलों से ट्यूमर को पछाड़ दिव्यांश ने 10 सीजीपीए अंक प्राप्त किये

एमएमपीएस के छात्र दिव्यांश पुत्र राजेन्द्र-रानी जैन ने सीबीएससी दसवीं बोर्ड परीक्षा परिणाम में 10 सीजीपीए अंक प्राप्त किये।

उल्लेखनीय है कि दिव्यांश ने पिछले दो वर्ष से ट्यूमर और नेत्र ज्योति क्षीण होते हुए भी अपने हौसले को बुलंद बनाये रखा और बीमारी को बुरी तरह पछांटते हुए अपनी पढ़ाई जारी रख स्कूल तथा अपने परिजनों का नाम रोशन किया। दिव्यांश के पिता राजेन्द्र जैन पेट्रोल पंप के मालिक हैं जबकि उनकी माता रानी जैन गृहिणी हैं।

उन्होंने बताया कि 18 अप्रेल 2015 को जब दिव्यांश सोकर उठा तो उसे धुंधला दिखाई दिया और स्कूल गया तो ब्लेक बोर्ड भी नजर नहीं आया। इस पर राजेन्द्र उसे इलाज के लिए मुंबई ले गए जहां डाक्टरों ने ऑप्टिकल नर्व का ट्यूमर बताया और कहा कि यह भयंकर बीमारी है किंतु दिव्यांश ने हिम्मत नहीं हारी और सबकुछ भुलाकर निरंतर अपने को पढ़ाई में व्यस्त रखा।

दिव्यांश ने बताया कि उसके माता-पिता ने उसके इलाज में कोई कसर नहीं रखी और हर समय उसके अध्ययन की रुचि में भरपूर सहायता की। स्कूल में भी गुरुजनों और दोस्तों ने उसकी हर संभव मदद की और उसके हौसले को बुलंद किये रखा।

अब वह इंजीनियरिंग करना चाहता है। उसका मानना है कि जीवन में कई तरह के उतार-चढ़ाव आते रहते हैं किंतु उससे जरा भी घबराना या हार नहीं मानना चाहिये। यदि हौसले बुलंद हों तो कोई भी बीमारी या विपरीत परिस्थिति किसी का कुछ नहीं बिगाड़ सकती।

दो गद्यकाव्य

हँसी

शासन करने की महत् आकांक्षा से प्रेरित होकर एक दिन मैंने रानी से कहा- 'देखो! मैं तुम्हें जो कहूं वह मानना पड़ेगा।' उसने लापरवाही से एक कटाक्ष फैंक कर कहा- 'क्यों?' और मैं सोचने लगा- इस तरह के क्यों का उत्तर त्रिभुवन में आज तक कोई दे भी सका है कि मैं ही दूं। इतने में रानी खिलखिला पड़ी, मानो पर्वत की धवल हिम पंक्तियों में से स्वच्छ स्फटिक-मणियों का स्रोत फूट पड़ा हो।

स्मरण हो गया- शैशव में एक बार फूटे थर्मामीटर के पारे को पकड़ने के लिए उसके ऊपर जोर का हाथ मारा था और वह सहस्त्रों शरीर होकर बिछल गया था। यौवन में आज फिर पारे को पकड़ने का प्रयास किया।

आँसू

ये निगाड़े आँसू! प्रियतम की विदा की बेला में, नयनों में पहले ही समा जाते हैं और दो क्षण भी मुझे जी भर उन्हें देखने नहीं देते। मिलन की बेला में भी, जब मैं हर्षातिरेक से पागल हो जाती हूं तब भी ये निगोड़े आँसू मेरा पीछा (पिण्ड) नहीं छोड़ते और मैं दृष्टि नीचे कर लेती हूं।

पर तभी प्रियतम चिबुक पकड़ मेरा चेहरा ऊपर की ओर कर देते हैं और इन्हें मेरी आँखों में देख, आँखों में आँखें डाल धीरे से कहते हैं- 'दुत पगली!' पर मैं दृष्टि ऊपर की ओर नहीं कर पाती और तब वे मुझे अपने बाहुपाश में कस लेते हैं। सचमुच उस समय मुझे बहुत प्यारे लगते हैं ये निगोड़े आँसू।

-नथमल केड़िया

स्मृतियों के शिखर (32) : डॉ. महेन्द्र भानावत

एक मुट्ठी आटे से मानव सेवा के व्रती कैलाश मानव

इस धरती पर भक्त अनेकों हुए, भक्ति के बीज बो गये।
स्वर्ग बनाने को संकल्पित पुण्य कमाने, पाप धो गये।।
देश प्रेम की अलख जगाने, कई वीरवर सुखद सो गये।
मानव थे, सेवा से साधु, साधु से कैलाश हो गये।।

इस दृश्य-अदृश्य जगत में जितने भी चर-अचर प्राणी निवास करते हैं उन सबमें मनुष्य सबसे श्रेष्ठ प्राणी है। विभिन्न शास्त्रों तथा धर्मग्रंथों में भी कई रूपों में मनुष्य की चिंतारणा की गई है। मनुष्य के माध्यम से ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न स्रोत विकसित हुए और अनगिनत अन्वेषण-अनुसंधान द्वारा लोकजीवन में व्याप्त रहस्यों का उद्घाटन हुआ।

मनुष्य अनेक जन्मों का चैतन्य :

यह मनुष्य किसी एक जन्म का प्राणधारी पुतला अथवा पिंड नहीं है। अनेकानेक जन्मों का सुगठित संस्कारशील चैतन्य है किंतु कर्मों के फल के अनुसार प्राप्त गति-मति में अपना विन्यास लिए है। कोई एक सांचा ऐसा नहीं जिसमें सभी ढाले गये हों, इसलिए प्रत्येक जन एक-दूसरे से भिन्न है। सबके कार्य, व्यवहार, बुद्धि, बल, संस्कार, सरोकार, सौजन्य, समझ आदि के दायरे जुदा-जुदा हैं। इन मनुष्यों में कुछ ही बिरले होते हैं जो अपने जीवन को सार्थक कर पाते हैं। ऐसे मनुष्य संकल्पबद्ध जीते हैं। वे अपने लिए नहीं, अन्यों के लिए जीते हैं। इसीलिए वे साधारण से असाधारण, सामान्य से विशिष्ट और अल्प से महान बन महामानव के रूप में जन-जन के श्रद्धाभाव से देवत्व को प्राप्त करते हैं और तब भी अदृश्य रूप में उनका समर्पण मानव कल्याण में ही जगजाहिर होता है।

केवल मनुष्य जीवन धारण करना ही सार्थक नहीं है। सार्थकता तो इसमें है कि मनुष्य, मनुष्य की सेवा करे। यह कार्य हर एक के बूते का नहीं है। सेवा सेंतमेंत में नहीं हो सकती। दूसरों की सेवा करना सचमुच में कठिन व्रत है। कठिन तप है। कठिन साधना है। एक संकल्प, संस्कार, सोच और सुविचार है। जिन्हें सेवा की जरूरत है, उनकी सेवा करना समर्पण और त्याग मांगता है। यह हारे को हरिनाम की तरह है।

बिरले हैं कैलाश 'मानव' :

नारायण सेवा संस्थान के संस्थापक कैलाश 'मानव' उन बिरलों में से हैं जिन्होंने सेवा का बीड़ा उठाया। परमार्थ का पौध रोपण किया। अपेक्षा भाव की अमराइयों से दूर रह, उस खुली किताब की तरह जिनका एक-एक पन्ना, उस पन्ने का एक-एक अक्षर करुणा से कवलित है। दया से द्रवित है। स्नेह से सिंचित है। सौहार्द से समन्वित है। क्षमा से सुवासित है। विनय से विगलित और धैर्य से ध्वनित है। इसके लिए जीवन को, हृदय को उस कमल की तरह खिलाना पड़ता है जो जलज होकर भी कमल बना रहता है। जल का दाग भी जिसे दाग नहीं दे पाता है।

ऐसी कोई बड़ी घटना, जिसे साधारण नहीं कहा जा सकता, जीवन में घटित होती है तभी कोई विशिष्ट कार्य करने की सूझती है। ऐसे महापुरूष हर जाति, हर सम्प्रदाय, हर वर्ग में हुए हैं जो जनजीवन में बड़ी श्रद्धा, विश्वास तथा आस्था के साथ याद किये जाते हैं।

कैलाश 'मानव' के जीवन में भी ऐसी ही घटना कोई घटी जिससे जीवन की राह बदल गई। सेवा का समंदर खड़ा हो गया। वह घटना 23 अक्टूबर 1985 की है। प्रतिदिन की तरह इस दिन भी वे उदयपुर के महाराणा भूपाल सार्वजनिक चिकित्सालय में रोगियों के हालचाल पूछने गये। उनसमें एक वृद्ध ग्रामीण किशना-बा थे जिन्होंने अस्पताल से मिलने वाली चार रोटियों में से मात्र एक का आहार किया और शेष तीन एक कपड़े में बांध सुरक्षित करली। कैलाशजी यह सब देख रहे थे। उन्होंने बड़े आत्म भाव से किशना-बा से कहा- ''बा-सा, इतने कम भोजन में कैसे जल्दी आराम पड़ेगा। भोजन तो पूरा डटकर खाओ ताकि आप यहां से छुट्टी पा अपने घर जा विश्राम करो।'' कैलाशजी की यह अति प्रेमभरी वाणी सुन किशना-बा का हिया भर आया। आंखें नम हो गईं। अत्यंत भावुक मन से वे बोले- ''क्या करूं, भूख तो इतनी लग रही है कि बहुत कुछ खालूं पर मेरे साथ, मेरी सेवा में मेरा भाई और लड़का भी है। उनके पास न तो आटा है और न ही पैसा इसलिए पिछले चार दिन से मैं एक रोटी खाकर शेष उनके लिए बचा रहा हूं। भगवान को जो मंजूर है उसी में संतोष है।''

एक मुट्ठी आटे का संकल्पित मन :

किशना-बा के इस कथन से कैलाशजी इतने द्रवित हुए कि वे नि:शब्द हो गये। उनकी आंखें छलक उठीं। हृदय द्रवित हो गया। पूरे दिन और रात बैचेन रहे। भोजन तो दूर, पानी का गिलास भी उनसे नहीं पिया गया। दुखी मन से नाना कल्पनाओं में खोगये। सोचते रहे कि क्या कुछ ऐसा किया जाय कि जिससे रोगियों की सेवा करने वालों को भी भरपेट भोजन मिल सके। पानी जब उफान पर होता है तो उसके बहने का मार्ग निकल आता है। दूसरे दिन दशहरा था। उनके पड़ौस में गायत्री यज्ञ का आयोजन था। कैलाशजी उसमें सम्मिलित हुए। वहां कई धर्मजीवी लोगों की उपस्थिति थी। कैलाशजी के लिए यह अच्छा अवसर था। उन्होंने उपस्थित महानुभावों को कल की घटित दुखभरी दास्तान से अवगत कराया और सुझाव दिया कि यदि प्रत्येक गृहिणी रोटी बनाने से पूर्व प्रतिदिन एक मुट्ठी आटा सेवार्थ निकाले तो कुछ हद तक ही सही, यह समस्या हल की जा सकती है।

यह कोई ऐसी बात नहीं थी कि जिसके लिए गहरा चिंतन किया जा सके। सामान्य से सामान्य गृहस्थी भी इस कार्य को सहज रूप से करने की सामर्थ्य रखता है। यह सिलसिला चल निकला। चारों ओर कैलाशजी के इस कार्य की प्रशंसा होने लगी।

कई परिवार और आगे आये जिन्होंने एक मुट्ठी आटा एकत्र शुरू किया। कैलाशजी के परिवार वालों ने इस कार्य में पूरा सहयोग ही नहीं किया, बल्कि उनके साथ अपने को भी समर्पित कर दिया। पत्नी कमला, पुत्र प्रशांत, पुत्री कल्पना, पुत्रवधू वंदना सब एक-मन अनंत-तन से उनके साथ हो गये।

आदिवासियों की सुध :

कैलाशजी के इस सेवाकार्य की सौरभ सब ओर फैलने लगी तब लोगों ने उन्हें अनाज, शक्कर, तेल, घी तथा कपड़ेलत्तों का सहयोग प्रारंभ कर दिया। इससे कैलाशजी को नया मार्ग हाथ लगा। उन्होंने अपने सेवा-संकल्प का दायरा बढ़ाया और उदयपुर के आसपास रह रहे अभावशील आदिवासियों की सुध लेनी प्रारंभ की।

कैलाशजी ने सर्वप्रथम आदिवासी बच्चों की ओर ध्यान दिया। मैंने उन्हें आदिवासी बालकों को हेंडपंप पर लाइफबॉय साबुन से नहलाते देखा। डॉक्टरों से उनका स्वास्थ्य परीक्षण कराते देखा। मुफ्त दवाइयों का वितरण करते देखा। वस्त्रहीनों को वस्त्र पहनाते देखा। सर्दी में ठिठुरते-कांपते ग्रामीणजनों को कम्बल सुलभ कराते हुए देखा।

भूखों को सत्तू खिलाते देखा। जब उन्हें लगा कि अधिकांश बच्चे ऐसे हैं जिन्हें भूखा रहना पड़ता है तब उन गांवों में शिविर लगाना शुरू किया। ऐसा पहला शिविर 20 अप्रेल 1986 को पई गांव में लगाया। इस शिविर के लिए उन्होंने 800 किलो का सत्तू तैयार करवाया। सत्तू के साथ-साथ 600 ऐसे बच्चों को पहनने को कपड़े दिये जो नंगे बदन थे। सेवा प्रकल्प की यह बेल बढ़ती गई। फलती-फूलती गई।

नरसी की धुन में कैलाशजी :

कैलाशजी और उनके द्वारा प्रारंभ किये एक मुट्ठी आटा के प्रकल्प के बारे में जब मैं सोचता हूं तो न जाने क्यों मुझे बार-बार नरसी मेहता की याद हो आती है। वे भी कैलाशजी जैसे ही छोटे कद के थे। दुखियों को देख वे भी इसी प्रकार द्रवित हो उठते थे और हर समय जरूरतमंदों की सहायता के लिए तत्पर रहते थे। यह उल्लेखनीय है कि नरसी भी राजस्थान के डूंगरपुर के नागर ब्राह्मण थे किंतु उनके पिता पक्के कृष्णभक्त और जूनागढ़ के दीवान थे।

नरसी भी अपने पिता की तरह कृष्णभक्त थे और साधु-संतों का आना-जाना उनके वहां हर समय बना रहता था। उनके वहां सभी मुफ्त भोजन करते थो। इस कार्य में जूनागढ़ के ही नहीं, आसपास के गांववाले भी उन्हें खुलकर सहयोग करते थे। एक मुट्ठी आटे की तरह प्रत्येक गांव के लोग एक मन अनाज में से एक सेर अनाज निकालकर नरसी को पहुंचाते। ऐसा बांरीबंध अनाज नरसी के यहां इकट्ठा होता। ऐसे ही गांव वाले गायों के लिए घास भेजते। उनके वहां गायें भी खूब पलतीं। दो सौ से अधिक साधु तो गायों की देखभाल के लिए रहते।

-शेष पृष्ठ सात पर

अभिनंदनीय

अनिल भानावत : ज्योतिषवाले स्वामीजी

अपनी जन्मभूमि का मोह छूटता नहीं है। यदा कदा चला जाता हूं। बालपन की याददाश्तों को अपने में पुनः-पुनः बसाने। जैसे मोबाईल को चार्ज करना पड़ता है वैसे ही अपनी स्मृतियों के बहाने लेखनी को लीलावान बनाने। हम भानावत वहीं चार-पांच परिवारों में सिमटे हुए हैं। पहले भनावत लिखते थे। पूछताछ करने पर ज्ञात हुआ कि भानाजी से हमारा वंश चला। पढ़ाई का यह लाभ रहा कि फिर हमारी गोत्र भनावत नहीं होकर भानावत होनी चाहिए। सबने इसे स्वीकार कर भानावत लिखना शुरू कर दिया।

कहासुनी कहां नहीं होती सो हमारे परिवारों में भी रही। मां हमारी बड़ी समझू थी। कानोड़ जब छोड़ दिया तो सबसे सौहार्द का रिश्ता जोड़ लिया। इस बार गया तो अनिल ने फोन पर कहा कि उदयपुर जाने से पूर्व मेरे यहां अवश्य आयें। मैं घर पर ही रहूंगा। मैं और तुक्तक दोनों गये। तुक्तक का जन्म उदयपुर का है। कानोड़ में वह अधिक को नहीं जानता। फल-फूल और डाल-पात के साथ जड़ की जानकारी कई नये शकुन देती है।

भानाजी का समय संवत् 1835 का है। उनकी दूसरी पीढ़ी में नेणजी के पांच लड़कों में जवेरजी के रखबजी और झूमजी के जीतमल हुए। जीतमलजी मेरे दादा थे जबकि रखबचंदजी के कालूराम हुए जो अनिल के दादा थे। मैंने कालूरामजी को देखा है। वे भी मेरे दादा जैसे ही छोड़ी थड़ी के थे। धोती कमीज और पीली पगड़ी धारी कालूबा शांत प्रकृति के ठंडे मानस थे। अनिल के पिता बालूलाल और मेरे अग्रज नाथूलाल उर्फ नरेन्द्र समान वय के थे।

मैं ज्योतिषी नहीं पर अनिल का उणियारा हूबहू अपने पिता को गया। हम शक्ल, हम रंग, हम रूप अनिल की चालढाल, बातचीत, बोली लहजा सब पिता के समानधर्मी। चेहरे पर भोलापन, बातों का रसिक, आत्मीयता का व्यवहारी, मान मनुहार का पक्का। कहनी कथनी समान, परोपकारी, वादे का पक्का, संबंधों का निर्वाही, मीठी वाणी आदि-आदि। कालूबा तथा मेरे दादा जीत्याबा भी ऐसे ही थे। पिताजी के निधन के बाद जब उनके गांवड़े अरनिया गया तो लोगों ने मुझे देख कहा- यो परतापबा रो नानो दीखै। वस्योर वस्यो उणियारो (यह प्रताप बा का लड़का लगता है। वैसी ही हम शक्ल वाला।) कह जो लाड़ लड़ाया, मैं अचपचाता रहा। अभिभूत होता रहा।

अनिल ने अति आत्मीयता से छपाक-छपाक काका-बाबा के रक्त संबंधों का जो फर्ज निभाया उसे देख मैं उस अतीत में चला गया। उसकी दादी लम्बे समय तक जीवित रही। अतीव भोलीभाली दिव्य विभूति ही थी। एकबार जब वह अपनी चांदणी पर बंदर को ताड़ने गई तो बंदर ने उसे काट खाया। इस पर वह कई दिनों तक बीमार रही। नानपण तो अनिल के तथा मेरे दोनों घरों में था। सब जानते भी थे पर कभी किसी ने दुखड़ा नहीं रोया और न घर-गिरस्थी का कोई भेद उजागर किया।

अनिल ने ज्योतिष के क्षेत्र में जो नामवरी की वह बेहिसाब, अतुलनीय है, ऐसा गांव के लोगों से जाना और अनिल की कार्यप्रणाली तथा उसके अलग-अलग कक्षों को निहार कर भी लगा। उसके पास किताबों का अच्छा संग्रह है और उसे शास्त्रों तथा धर्मग्रंथों में लिखे कथन तो याद हैं ही पर जो व्यावहारिक अध्ययन और उसमें ज्योतिष कथनों को परिणाममूलक स्थिति में पारदर्शिता के साथ परख करने का गुण है वही मुझे अचरज में डाल गया। सर्वाधिक अध्ययन तो उसने कानोड़ की वास्तु, भौगोलिक संरचना तथा वहां के निवासियों के कर्म-कर्तव्य का ही किया है। अपने कथन की फलश्रुति में उसने जो जीवंत परिणाम भोग रहे व्यक्तियों का अध्ययन बताया तो मुझे वह सारा लोक याद आ गया जिसका पिछले 50-60 वर्षों से मैं खोजा बना हुआ हूं। अध्ययन की आंख-पांख ठीक हो तो लोक के निष्कर्ष शास्त्र को भी सही देते हैं। कई बार मात देने में भी कोई संकोच नहीं करते। अनिल को सभी ज्योतिष के स्वामीजी के नाम से जानते हैं। यही उसकी कमाई है। उसके पास कौन-कौन किस-किस ओहदे के लोग आते हैं यह कहने का नहीं है। एक प्रसंग में ज्योतिष रहस्यों का पर्दा लिए भी है। प्रश्नकर्त्ता और उत्तरदाता ये दो ही कान होते हैं जो जानकारी रखते हैं, सुनते सुनाते हैं। तीसरा प्राय: होता ही नहीं। एक अच्छा ज्योतिषी कितने हारे हुओं को हरि नाम देकर निराशा, निर्बलता, निरीहता, पराजिता को पछांटता हुआ वैभव, विजयश्री तथा तारक विद्या का धारक बनाता है। इस अर्थ में एक अच्छा ज्योतिषी देवदूत की भूमिका ही निभाता है। अनिल को अभी अनिल वेग से आगे बढ़ना है। **-म.भा.**

डॉ. अग्रवाल को महाराणा प्रताप सम्मान

सजीव सेवा समिति द्वारा आयोजित 19वां मेवाड़ गौरव अलंकरण महाराणा प्रताप सम्मान-2017 भौतिक वैज्ञानिक अनुसंधाता एवं जैनदर्शनशास्त्री डॉ. पारसमल अग्रवाल को प्रदान किया गया। समारोह के अध्यक्ष मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. जे. पी. शर्मा तथा प्रमुख वक्ता इतिहासकार डॉ. के. एस. गुप्ता थे। संस्थापक महासचिव शान्तिलाल भंडारी ने संस्था का परिचय प्रस्तुत किया। संयोजन प्रकाश तांतेड़ ने किया। इस अवसर पर प्रो. रणजीतसिंह सोजतिया, समाजसेवी फतहलाल नागोरी, एस. एल. पामेचा, डॉ. एल. एल. धाकड़ की विशेष उपस्थिति रही।

लोकभाषाओं में वाचिक परंपरा की संस्कृति (2)

-डॉ. प्रयाग जोशी-

मेरे संज्ञान में यह भी आया है कि मध्यम श्रेणी का ही नहीं अपितु तृतीय श्रेणी का छात्र भी लोकसाहित्य के संकलन में लगाया जा सकता है। मेरा एक गरीब छात्र था। उसने एम.ए. में सिर्फ 40 प्रतिशत ही अंक पाए। मैंने उसे गंगा के गीतों को इकट्ठा करने के काम में लगाया। वह एक दिन 9000 लोकगीतों का संग्रह लेकर मेरे पास आया। उसके गीत छप तो नहीं पायें है पर इससे क्या? वे संकलित तो हो ही गए हैं। हमारे विशाल देश की कितनी ही अमूल्य विरासतें इसीलिए नष्ट होती जा रही हैं कि उन्हें संग्रहित करके रखना ही, उनके जिंदा रखने का एकमात्र उपाय है। उसकी मुहिम में यदि कोई लगा हुआ है तो उसे गौरव मिलना ही मिलना है। जहां परिवर्तन की गति जितनी ही तीव्र है वहां उतनी ही तेजी से अपनी माटी की सुगंध बिखेरती संस्कृति लुप्त हो रही है। इसलिए इस दिशा में सचेत हर आदमी को देखते रहना जरूरी है कि कहां क्या खत्म हो रहा है। यह निर्विवाद है कि सबसे मुश्किल दिनों के गीत ही सबसे मीठे होते हैं। लोकभाषाओं में जीवित वाचिक परंपरा की साहित्यधर्मी विधाओं को मटियामेट होते देखते रहना ऐसा ही है जैसे गंगा नदी को कूड़े-कचरे और मल-मूत्र के परनालों में बदलते हुए देखते रहना। हम सबकी जिम्मेदारी है कि अपने-अपने स्तर पर उसकी हिफाजत के लिए जो भी कर सकें, करें।

आजकल प्राय: सभी विश्वविद्यालयों ने एम.ए. के उत्तरार्द्ध में एक सौ अंकों की मौखिकी भी रखी हुई है। उसमें एक परीक्षक बाहर का होता है, एक आंतरिक। जब मैं आंतरिक परीक्षक था तो उत्तरार्द्ध के विद्यार्थियों से पचास-पचास लोकगीत उन विधाओं के संकलित करवाता था जो लुप्त होती जा रही विधाएं हैं। मौखिकी के दिन उनके कामों के 30 नंबर उन्हें देता था। 20 नंबर मौखिकी के देता था। 50 अंक बाहरी परीक्षक के लिए छोड़ता था।

पेपर सेटर होता तो साहित्यिक निबंधों में, एक प्रश्न लोक साहित्य पर जरूर पूछता था। कबीर, जाससी और आदिकालीन कवियों की कविता के साथ जुड़े लोकपक्ष को समझ चुके छात्रों के लिए लोकसाहित्य और लोकवार्ता शब्द परिभाषित हो जाते हैं।

मेरे संज्ञान में यह भी आया है कि मध्यम श्रेणी का ही नहीं अपितु तृतीय श्रेणी का छात्र भी लोकसाहित्य के संकलन में लगाया जा सकता है। मेरा एक गरीब छात्र था। उसने एम.ए. में सिर्फ 40 प्रतिशत ही अंक पाए। उसे दुबारा एम.ए. करने की धुन चढ़ी। दो वर्ष उसने फिर बरबाद किये।

हाय रे किस्मत ! दुबारा भी 40 ही प्रतिशत नंबर आए। डबल एम.ए. कहने में भी शरमाता था। उसे नौकरी-चाकरी कुछ नहीं मिली। काम की ढूंढ में अक्सर आता रहता तो मुझसे मिलता रहता था। गंगा के किनारे उसका गांव था। वहां मेले लगते ही रहते थे। मैंने उसे गंगा के गीतों को इकट्ठा करने के काम में लगाया। उसने उसमें रूचि ली और उसी निमित्त उसका लोगों से संपर्क बढ़ता गया। लोग उसे लोकगीतों का संग्रहकर्ता मानकर आदर देते और प्रोत्साहित करते। वह एक दिन 9000 लोकगीतों का संग्रह लेकर मेरे पास आया। उसके गीत छप तो नहीं पायें है पर इससे क्या? वे संकलित तो हो ही गए हैं।

एक और विद्यार्थी रिचर्स करने की महत्वाकांक्षा लेकर आया। वह राजस्व विभाग में नौकरी पा गया था। लेखपाल था। वह किसी धांसू गाइड के पास गया होता तो आज पीएच.डी होता। मेरी समझ में नहीं आया कि एक लेखपाल अपने नाम के आगे 'डाक्टर' शब्द लिखेगा तो उस उपाधि की कितनी इज्जत होगी? मैंने उसे लोककथाओं के संकलन का विषय दिया। कहा सिनॉप्सिस तभी बनेगी जब आप 9000 लोककथाएं लाकर दिखायेंगे। एक सौ कहानियां इकट्ठी करते-करते वह इतने बड़े संसार में चला गया था कि उससे छोटे में आना अब संभव ही नहीं रहा। वह इतना गौरव पा गया है जितना पीएच.डी. करके मिलना शक्य ही नहीं था। काम प्रकाशित उसका भी नहीं हुआ है परंतु संकलित तो हुआ।

हमारे हर विद्यार्थी को नौकरी की तलाश है। वह डिग्री को नौकरी पाने का टोकन समझता है। हमने वैसा ही तो बनने दिया है। पात्रों की सही रूचि पहचान कर यदि काम में लगा दिया जाय तो बिना लाभ के कामों में भी यश और गौरव है।

यह मिल जाता है तो लोगों को उनमें भी रस आने लगता है। हमारे विशाल देश की कितनी ही अमूल्य विरासतें इसीलिए नष्ट होती जा रही हैं कि उन्हें संग्रहित करके रखना ही, उनके जिंदा रखने का एकमात्र उपाय है। उसकी मुहिम में यदि कोई लगा हुआ है तो उसे गौरव मिलना ही मिलना है।

हमारी स्थानीयताएं घट रही हैं। लोकरंग धूमिल होते जा रहे हैं। सार्वभौमिक भौतिक परिवर्तनों के साथ आंचलिक भाषाएं सिमटती-मिटती चली जा रही हैं। जहां परिवर्तन की गति जितनी ही तीव्र है वहां उतनी ही तेजी से अपनी माटी की सुगंध बिखेरती संस्कृति लुप्त हो रही है। इसलिए इस दिशा में सचेत हर आदमी को देखते रहना जरूरी है कि कहां क्या खत्म हो रहा है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ ही अपने देश में परिवर्तन का व्यापक दौर शुरू हो गया था। भले ही कस्बों, देहातों और गिरि-प्रांतरों में बसे गांवों में उस परिवर्तन की प्रतीक सिद्ध हुई सड़कें, बिजली, इंजन, संचार माध्यम, उन्नत बीज, उर्वरक, दुधारु पशु-नस्लें आदि के पहुंचने में बीसियों वर्ष लगे हैं और अभी भी ऐसे इलाके हैं जहां वे नहीं पहुंचे हैं। पुरानापन ज्यों का त्यों वहीं रह पाता है जहां ये नहीं पहुंचती और इन्हें वहां पहुंचाना हमारी जरूरत है। इसलिए पुराने को मिटाने से पहले उसको संरक्षित कर देने का काम भी हमारी प्राथमिकता में होना जरूरी है।

हमारी वाचिक परंपरा की अनेक साहित्य-विधाएं खत्म हुईं क्योंकि वे हाथों से किये जाने वाले कामों से जुड़ी हुईं थीं। हाथों का काम मशीनें करने लगीं तो उनको खत्म होना ही था। उदाहरण के लिए जंतसारी के लोकगीतों को लेते हैं। स्त्रियां हाथ की चक्की पर अनाज पीसते-पीसते इन गीतों को गाती थीं। गांवों-कस्बों में डीजल और बिजली की चक्कियां चलने लगीं तो स्त्रियों को जंतसारी से फुर्सत मिली। फुर्सत मिलना अच्छा था परंतु गीतों को हम नष्ट होने से बचा सकते थे। जहां वे जिंदा हैं अभी भी लिखकर बचाए जा सकते हैं।

इसी प्रकार काम के साथ जुड़े हुए गीतों की एक विधा राहगीतों की थी। आदमी पैदल चलते थे। थकान तो होती थी पर उसका अपना आनंद भी था। रास्ते में जलाशय, छायादार वृक्ष, सुंदर नयनाभिराम दृश्य, सुखद रात्रिवास, सुगम पथ आदि कितनी ही चीजें मिलती थीं तो खुद ब खुद यात्री गुनगुनाने-गाने लगता था। तेज रफ्तार गाड़ियां आईं। उड़कर देशांतर करने की सुविधाएं हुईं। यात्राएं इतनी आराम की कि खाया-पिया और सो गये।

आंख खुली तो देखा कि गंतव्य प्रदेश-देश-विदेश पहुंचे हैं। आदमी राहगीर रह ही नहीं गया तो राहचल की गति-विधा कहां चलेगी। यदि कहीं चल रही है तो उसे लिपि में ढालकर अक्षर-अक्षर कर देना है।

जो कम्प्यूटर में बैठा-बैठा लाखों-करोड़ों का हिसाब कर रहा है, नेट क्वालीफाइ करके विश्वविद्यालय-महाविद्यालय में तीस-पैंतीस हजार पा रहा है, कार में चल रहा है वह क्यों करने लगा इन गीतों को इकट्ठा। गुरीब-गुर्द, पढ़ा-लिखा, पंक्ति के पीछे खड़े हुए को करना होगा यह काम। यही काम उसके कैरियर का निर्माण करेगा।

उत्तराखंड की पहाड़ियों में मडुवे की गुड़ाई करते समय 'हुड़कियो बोल' गाने और गांव भर के स्त्री-पुरूषों को उसमें सामूहिक रूप से सम्मिलित कराने की परंपरा थी। सीढ़ीदार खेत के एक कोने से गुड़ाईदार कुदाल लेकर अपना काम करते थे और उनकी तरफ मुंह करके 'हुड़किया' उल्टे पैर पीछे चलता जाता और किसी मल्ल का पवाड़ा गाता जाता था।

देवीलाल-तारा परिणय सूत्र में बंधे

पार्श्वकल्ला पेपर्स में सेवारत देवीलाल मीणा का विवाह उदयपुर से 60 किलोमीटर दूर उसके पैतृक गांव चणावदा में 8 जून को सम्पन्न हुआ।

विवाह से पूर्व आयोजित प्रीतिभोज में सम्मिलित राजेन्द्र पालीवाल, देवीलाल मीणा, डॉ. तुक्तक भानावत तथा विकल्प मेहता।

जिंक को 'नेशनल एनर्जी मैनेजमेंट अवार्ड'

हिन्दुस्तान जिंक की इकाई चन्देरिया स्मेल्टर कॉम्पलेक्स-कैप्टिव पॉवर प्लांट को वर्ष 2016 में ऊर्जा दक्षता एवं विभिन्न बिजली बचत परियोजाओं के क्रियान्वयन के लिए पॉवर प्लांट इण्डस्ट्रीज की श्रेणी में 'एसईईएम नेशनल एनर्जी मैनेजमेंट अवार्ड-2016' से सम्मानित किया गया है।

हिन्दुस्तान जिंक के हेड-कार्पोरेट कम्यूनिकेशन पवन कौशिक ने बताया कि यह प्रतिष्ठित पुरस्कार कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय बर्कले के 2007 नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित टीम के सदस्य डॉ. जयन्त साठे, के. के. चक्रवर्ती, एनर्जी इकोनोमिस्ट, यू.वी. कृष्णमोहन राव, निदेशक-एसईईएम तथा जयन्तकुमार आर. चेयरमैन-एसएनईएमए ने सोसायटी ऑफ एनर्जी इंजीनियर्स एण्ड मैनेजर्स (एसईईएम) द्वारा अहमदाबाद में आयोजित एक समारोह में प्रदान किया। हिन्दुस्तान जिंक की ओर से यह पुरस्कार विपिन बंसल, हेड-कैप्टिव पॉवर प्लांट, चन्देरिया स्मेल्टर कॉम्पलेक्स ने ग्रहण किया।

ऑस्ट्रेलिया की विक्टोरिया पार्लियामेंट में नवाजे गए लक्ष्यराजसिंह मेवाड़

भारत एवं ऑस्ट्रेलिया के मध्य शिक्षा, व्यापार, संस्कृति एवं पर्यटन के क्षेत्र में विकास की संभावनाओं को देखते हुए उदयपुर के लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ ने गुरूवार को ऑस्ट्रेलिया सरकार की विक्टोरिया पार्लियामेंट के मंत्रियों से मुलाकात की। इस दौरान लक्ष्यराजसिंह को पार्लियामेंट का अतिविशिष्ट स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

ऑस्ट्रेलिया सरकार के विशेष निमंत्रण पर ऑस्ट्रेलिया के मेलबोर्न पहुंचे लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ ने पार्लियामेंट के प्रेसिडेन्ट एवं स्पीकर ब्रुस एटक्विंसन, सांसद क्रेग ओनडर्ची सहित अन्य सरकारी अधिकारियों, प्रमुख उद्योगपतियों से मुलाकात की। इस दौरान लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ ने भारत, राजस्थान एवं उदयपुर में शिक्षा, व्यापार, पर्यटन, खेल एवं चिकित्सा के क्षेत्रों में विभिन्न आयामों के आदान-प्रदान पर विस्तृत चर्चा की।

लक्ष्यराजसिंह ने बताया कि ऑस्ट्रेलिया से उनका रिश्ता गत 11 वर्षों से है। उन्होंने सिडनी के प्रसिद्ध ब्ल्यू माउंटेंस इंटरनेशनल होटल मैनेजमेंट स्कूल में 4 वर्ष तक पढ़ाई कर डिग्री हासिल की। लक्ष्यराजसिंह ने अपने पुराने मित्र नितिन गुरसहानी के साथ भारत ऑस्ट्रेलिया में बिताए यादगार पलों का भी जिक्र किया।

शब्द रंजन

उदयपुर, गुरूवार 15 जून 2017

सम्पादकीय

सफाई अपनी भी, परायी भी

चाहे गांव हो या फिर शहर, सफाई की बात सभी करते हैं। सब सफाई में रहना भी चाहते हैं किन्तु यदि तनिक गंभीरता से विचार किया जाय तो पता चलेगा कि गंदगी कौन करता है? क्यों करता है? चूक कहां है? सभी साफ सुथराई चाहकर भी समस्या का निदान नहीं हो पाता है।

दरअसल हमारे में आत्मचिन्तन का स्वभाव नहीं रहा है। दूसरों की गलतियां, दूसरों की चूक, दूसरों के अपराध, दूसरों की बुराइयां ही हमें अधिक दृष्टिगत होती हैं और हम बहुत सारा समय दूसरों की अवमानना में ही व्यतीत कर अपने को सुखी, सन्तोषी और अच्छा समझने की होशियारी करते हैं।

अक्सर देखा जाता है कि हम ही हैं जो अपने घर की, अपनी नाली की, अपनी गली-चौपाल या फिर सड़क की सफाई तो करते हैं पर कचरा पास वाले के वहां डालते हैं। इस प्रकार हमारे पड़ौसी का कचरा हमारे यहां और हमारा कचरा हमारे पड़ौसी के पास बिखरा पड़ा रहता है।

हम यह भूल जाते हैं कि जो कचरा हमने अपना निकाला है वही हवा के द्वारा, आने जाने वालों के द्वारा या फिर आवारा जानवरों द्वारा हमारे ही लिए मुसीबत बन कर आता है। कई बार होशियार पड़ौसी अपना, अपने आसपास का कचरा बुहार चुपके से सामने वाले या फिर पास वाले पड़ौसी के वहां डाल देते हैं। ऐसे पड़ौसी भी देखे हैं जो अपने घर की सुध तो लेते हैं पर नाली को कभी साफ नहीं कर उल्टा कचरा भी नानी में डालकर पड़ौसी के लिए मुसीबत खड़ी कर देते हैं। यदि पड़ौसी सफाई पसंद है तो उसके ऊपर क्या गुजरती होगी जब वह अपने साथ अपने पड़ौसी की नाली, सड़क भी साफ करता रहता है।

ऐसा भी होता है जब कोई ऊपर की मंजिल पर रहता है तब वह अपने कचरे की थैली यूं-की-यूं सड़क पर फैंक देता है। इससे साफ सड़क भी और अधिक गंदी होती दिखाई देती है। फिर आवारा जानवर उस थैली को बिखेरकर आर अधिक गंदगी फैलाने में तनिक भी देर नहीं करते।

सफाईकर्मी सरकारी व्यक्ति या फिर ठेकेदार होता है। वह मोटे झाड़ू से आरामतलब बना हुआ सड़क की मोटी सफाई ही अधिक करता है। कई बार वह सड़क की सफाई कर कचरा नाली में फैंकने में अपनी चतुराई समझता है। सफाई के नाम पर सफाईकर्मी से उलझने में सफाई जो थोड़ी-बहुत भी हो रही है, वह भी नहीं होगी और अधिक नाराज होने पर वह और अधिक गंदगी फैलाने में भी संकोच नहीं करेगा।

अच्छा तो यह हो कि हर व्यक्ति दूसरे को नहीं देखकर अपनी जिम्मेदारी वहन करे और प्रतिदिन अगर इस ओर अपनी दृष्टि केन्द्रित करे तो उसे भी अधिक माथापच्ची नहीं करनी पड़ेगी और जैसा व्यक्ति स्वयं रहना चाहता है वैसा ही अपने घर को, अपने आसपास को रखने में कामयाब होगा। आवश्यकता है, हर व्यक्ति अपने घर में अपना कचरापात्र रखे और नियमित रूप से जहां कचरा डालना हो वहां डाले। बच्चों में भी यह आदत डालें कि वे गंदगी न करें और सफाईदार बनें।

पत्र-पिटारी

'शब्द रंजन' बराबर मिल रहा है। पत्र के नाम में ही ऐसा आकर्षण प्रारम्भ से ही देख रहा हूं, जो साहित्यकार मन को प्रभावित करता है। इस बार के अंक (7) में आचार्य महाप्रज्ञजी के आलेख ने मेरे दार्शनिक साहित्यकार मन को झकझोर दिया। इस ज्ञानात्मक शीर्षक ने या यों कहें भीतर स्थिर सूक्ष्मतर शरीर ने प्रभावित कर मेरे हाथ में पेन दे दिया और पत्र के नाम 'शब्द रंजन' के सौंदर्य में डूब गया। सोचा आपको अपनी हृदयस्थ भावना प्रकट करूं या डॉ. महेन्द्रजी भानावत को या पत्र की सम्पादिका श्रीमती रंजना भानावत को। पूरा परिवार पूरे समर्पित भाव से ज्ञानात्मक अमृत 'शब्द रंजन' के माध्यम से प्रसारित करने हेतु लगा है। हृदय के गहन तक पूरे परिवार को अतीव साधुवाद। मेरी बधाई लें, जार के जिलाध्यक्ष बनने पर। डॉ. महेन्द्रजी को मेरा नमस्कार कहें।

-डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय', कोटा

'शब्द रंजन' 2 मई 2017 का आठवां अंक वास्तव में विचार और जनसंवाद का पाक्षिक है। कला की सार्थकता जुड़ने में, एक विचारोत्तक लेख, दो दिन बालकवि बैरागी के साथ, खोज-खबर, कुंडा पंथ एक नवीन जानकारी वाला आलेख है। डॉ. तुक्तक भानावत का 70 साल से साइकलिंग पर फेयर एण्ड फिट, पर्यावरण सुधार का प्रमुख साधन है। शिकार में महाराणा के साथ और तथ्यपरक खबरें ; सुव्यवस्थित ढंग से चुनी हुई हैं।

इस दृष्टि में आपका पत्र अनेक पत्रों की भीड़ में अलग ही नजर आता है। उदयपुर की धरती से निकलने वाला यह पत्र मुझे 1954-55 की याद दिलाता है जब में बी.एड. के लिए उदयपुर एक साल रहा। नंद चतुर्वेदी हमारे गुरु रहे। प्रकाश आतुर एक उत्साही और साहसिक शिक्षाविद् थे। उस समय के साहित्यकारों के नाम जब पढ़ता हूं तो साठ साल पहले की स्मृतियां ताजा हो जाती हैं। इतने सुन्दर संकलन के लिए बधाई स्वीकारें। **- नागराज शर्मा, पिलानी**

मनहर प्रभा बिखेरते रहे मनोहर प्रभाकरजी

सरकारी सेवाओं में रहते पत्रकार और लेखक के साथ जनसम्पर्क से अधिकाधिक रूप में जुड़े रहने वालों में मुझे दो व्यक्ति अधिक प्रभावी और लोकप्रिय लगे जो अब स्मृतिशेष हैं। उनमें एक राजेन्द्रशंकरजी भट्ट तथा दूसरे डॉ. मनोहरजी प्रभाकर थे। प्रभाकरजी से मेरा अधिक खुलापन और सम्माननीय याराना रहा। दोनों ही मेरे से अधिक बड़े, अधिक अनुभवशील, अधिक रोचक और अधिक सम्पर्की थे जो राजकाज की दृष्टि से गोटियां बिठाने तथा उन्हें दुरस्त रखने में भी कामयाब रहे।

भट्टजी मुझसे एक पीढ़ी से भी आगे थे पर बड़े सहृदयी और मुस्कान भरे थे। उनसे भी कई जगह और उनके निवास पर मेरा मिलना हुआ पर अपनी कम आयु के संकोच के रहते उनसे मैं ही सिकुड़ा रहा। मनोहरजी मुझसे आधी पीढ़ी ही बड़े थे। उनसे यह अलगाव भी नहीं रहा इसलिए भी कि वे बड़ी मस्त तबीयत के मिलनसार आत्मीय और मौका मिलने पर ठहाके मारने की चूक नहीं करते थे। मैं ऐसी यारबाजी का अभ्यस्त कुछ तो नंदबाबू तथा डॉ. प्रकाश आतुर के साथ रहने से और कुछ हमदोस्त कमर मेवाड़ी एवं पुरुषोत्तम छंगाणी के याराना से हो चुका था। ठहाकों के ठाठ ठसक में आलमशाह भी निरन्तर स्मृति में रहते हैं।

प्रभाकरजी ने कई क्षेत्रों में, विविध रूपों में अपनी प्रभा बिखेरी। उन्हें एक सधे हुए गीतकार, एक सफल विचारक, एक कुशल सम्पादक और बंधे हुए स्तंभकार के अलावा सरकारी कामकाज की उपलब्धियों और योजनाओं को सुथराई से प्रचारित तथा प्रकाशित कर जनजीवन को सफलतापूर्वक खबरवान बनाने का उल्लेखनीय श्रेय जाता है।

मनोहरजी मेरे अग्रज डॉ. नरेन्द्र भानावत के अच्छे दोस्त थे। उनके निधन के बाद वे डॉ. संजीव से गहरे जुड़े सो उनके हालचाल मैं डॉ. संजीव से लेता रहता। गत 25 अप्रेल को जब जयपुर गया तो दृढ़ निश्चय कर लिया कि इस बार प्रभाकरजी से अवश्य भेंट करूंगा। यह सोच मैंने अपने मित्र श्रीकृष्ण शर्मा को फोन किया और उनके घर चला गया। शर्माजी से बहुत पहले जब वे उदयपुर में थे तब से मेरी घनिष्टता रही। यहां उनके अन्य अजीज थे डॉ. विजय कुलश्रेष्ठ, चन्दन जोशी तथा वीरचन्द मेहता। चारों मिल विविध कार्यक्रमों की आये दिन हलचल देते रहते। देवीलाल सामर से इनका नैकट्य होने के कारण अधिकतर यादगार कार्यक्रम भारतीय लोककला मंडल में किये सो मैं इनके और अधिक निकट हो गया।

सो उस दिन शर्माजी मुझे मनोहरजी से मिलाने ले गये। मैं पहली बार ही उनके निवास पर गया था। यों बीमार तो वे चल ही रहे थे मगर मुझे कोई गंभीर बीमार नहीं लगे। अपने कक्ष के बाहर आकर वे बड़ी तबीयत से गले मिले। कुशलता के हालचाल पूछे और पास ही के कमरे में हमें बैठक दी। उदयपुर की नई-पुरानी साहित्यिक गप्पेबाजी के बीच वे हमारी मेहमानवाजी करना नहीं भूले। हमारे नहीं चाहते हुए भी वे हमारी रसिकता को विराम देते उठे और ताजे लड्डू लाये। बार-बार उन्हें खाने का प्रेशर देते रहे। हमने मजाक भी दी कि सरकार में रहते कई तरह का प्रेशर आप पर आया होगा और दूसरों पर भी प्रेशर मारते रहे होंगे। ऐसी स्थिति में लड्डू पर प्रेशर देने का अभ्यास अब भी छूटा नहीं है। हमें लगा कि लड्डू खाये बिना वे छोड़ेंगे नहीं और न बातों का सिलसिला ही जुड़ेगा। अपने हाथों से हमारे हाथों में लड्डू देने की उनकी महनीय परोसकारी ने वातावरण को और खुशहाल बना दिया। आध-पौन घंटा कैसे बीता, हम भूल बैठे कि मनोहरजी बीमार हैं। वे बाहर तक हमें छोड़ने आये।

ऐसे यारबाज मित्र जहां भी जुड़ते हैं, दुखदर्द सब कुछ हवा हो जाता है। इस यारबाजी के कारण ही मनोहरजी हंसते-मुस्कराते 85 वर्ष की उम्र में 10 जून 2017 को सदा के लिए हम सबसे स्मृतिशेष हो गये।

शोध के सिलसिले में पंजाबी छात्र जसवंतसिंह

फिरोजपुर जिले के छोटे से गांव हड्डीवाला, पोस्ट थारीवाला के रहने वाले जसवन्तसिंह बीकानेर, जोधपुर की यात्रा करते हुए 12 मई को उदयपुर मुझसे मिले। पीएच.डी. के लिए उनका शोध विषय पंजाबी तथा राजस्थानी लोकसंगीत का तुलनात्मक अध्ययन है। राजस्थान में वे कई विद्वानों से मिले और उनके कहे अनुसार उन्होंने बहुत सारा साहित्य भी खरीदा। अक्सर यह होता है कि शोधार्थी जिनसे भी मिलता है वे विद्वान उस विषय के निष्णात नहीं होते हुए भी लगातार उसे यह आभास कराते रहते हैं कि वे ही उसके लिए पूरे परिपक्व और पर्याप्त मार्गदर्शक हैं। वे अन्य विद्वानों के नाम पते देने में भी कंजूसी करते हैं जो उनसे अधिक सही विषय-विशेषज्ञ होते हैं।

जसवन्तसिंह को मैंने बताया कि राजस्थानी लोकगीत-संगीत को लेकर फुटपाथ से लेकर सुखपाथ तक शताधिक पुस्तकें छपी हैं। डॉ. स्वर्णलता अग्रवाल ने राजस्थानी लोकगीतों पर ही शोध की फिर जगमलसिंह 'ग्रामीण' ने राजस्थानी और गुजराती लोकगीतों का तुलनात्मक अध्ययन कर पीएच.डी. प्राप्त की। दो-दो भागों में दोनों के शोधप्रबंध प्रकाशित भी हुए। नरोत्तमदास स्वामी, पुरुषोत्तम मेनारिया, रानी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत, गोविन्द अग्रवाल, अगरचंद नाहटा, किरण नाहटा, कोमल कोठारी, सुधा राजहंस, सारस्वत, विजय वर्मा, मनोहर शर्मा, जयचंद शर्मा आदि अनेक विद्वानों ने बड़ा गंभीर कार्य किया। राजस्थान संगीत नाटक अकादमी ने अनेक पुस्तिकाएं प्रकाशित कीं। भारतीय लोककला मंडल और अन्य संस्थाओं ने भी बड़ा अच्छा कार्य किया। कलामंडल से राजस्थान स्वर लहरी तथा अलग से काजल भरियो कूंपलो, मोरिया आछो बोल्यो जैसी पुस्तकें मैंने भी तैयार कीं। नादमूर्ति, रामलाल माथुर, कृष्णकुमार देहलवी का काम भी महत्वपूर्ण माना गया। देवीलाल सामर ने लोकगीत-संगीत के विविध पक्षों पर खूब अच्छा लिखा।

राजस्थान के विविध अंचलों में रहने वाले विद्वानों ने अपने-अपने अंचलों तथा जातिगत लोकगीतों के अच्छे संग्रह निकाले। परम्परा, वरदा, लोककला, रंगयोग, मरु भारती, राजस्थान भारती, वाग्वर, मड़ई, शोध पत्रिका, वैचारिकी जैसी अनेक पत्र-पत्रिकाओं ने प्रभूत मात्रा में इस विषय पर सामग्री दी। राजस्थान के बाहर भी रतन शाह, अपराजिता जैसे प्रवासी राजस्थानी भाई-बहिनों ने अच्छा काम किया। यहां के लोकगीत-संगीत को लेकर विभिन्न विश्वविद्यालयों में भी शोधप्रबंध लिखे गये।

मैंने जसवंत से यह सवाल भी किया कि पंजाब और राजस्थान की प्रकृति-संस्कृति में ऐसा क्या है जिसकी समानान्तर तुलना की जा सकती है। हम जहां रचे बसे हैं वह धरती, प्रकृति और वहां के लोकाचार हमारे लिए अधिक जीवनानुभवी होते हैं। फिर जो विधा जन-जन में, हर जाति में व्याप्ति लिये है उसका समग्र अध्ययन कैसे करें। क्यों न एक ही विधा विशेष पर ही हम अपना ध्यान केन्द्रित करें।

लोक से जुड़ा कोई विषय हो, उस लोकदर्शी समाज का अध्ययन जरूरी है। मैं कई बार कहता हूं कि विश्वविद्यालयों में लोकसाहित्य को लेकर विशाल पैमाने पर शोधकार्य सम्पादित तो हो रहा है किन्तु लोक का दर्शन-परिदर्शन शोध छात्र नहीं कर पाते हैं। ऐसी स्थिति में क्या यह अध्ययन एक पक्षीय नहीं रह जायेगा। प्रश्न अनेक हैं जिनका समाधान भी प्रज्ञावान विद्वान अपने-अपने ढंग से देते हैं किन्तु तब भी मैं ऐसे विषय के लिए जमीनी आधार को देखना, उसकी जीवंत धड़कन को सुनना और उसके समग्र चराचर को समझते हुए आत्मसात करना जरूरी समझता हूं पर यह भी जानता हूं मेरे समझने से कुछ होने वाला नहीं है। जानता हूं यह भी कि अधिक बुद्धिमान प्रज्ञावान तथा प्रतिभा सम्पन्न होना भी खतरे की घंटी है। **-म.भा.**

पोथीखाना

एक अनूठा इतिहास ग्रंथ और दो विशिष्ट पत्रिकाएं

ऐतिहासिक ग्रंथों का अनूठा अनुशीलन :

राजस्थान में अनेक दुर्लभ ग्रंथों, ख्यातों, पट्टों, परवानों, विगतां, वंशावलियों, तवारिखों, शिलालेखों, ताम्रपत्रों, बहियों, हकीकतों, परचियों, रूक्कों तथा पानड़े-पानड़ियों की खोज, संधान, संरक्षण, सम्पादन तथा प्रकाशन करते डॉ. हुकमसिंह

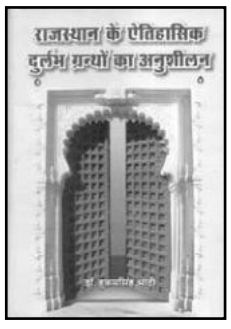

भाटी हमारे लिए गौरव-गर्वित इतिहास पुरुष ही बने हुए हैं। अपने समय से भी आगे निकल उन्होंने अनेक गांवों की यात्रा कर, अनेक ठिकानेदारों से भेंट की। अनेक उपयोगी एवं अप्राप्य हस्तलिखित ग्रंथों तथा धूलि धूसरित होती सामग्री को संवारकर कबाड़ से कंचन बनाया और राजस्थान के इतिहास के अनेक गवाक्षों तथा पगडंडियों को नई पहचान देते जो मार्ग सुनिश्चित किया वह आने वाले इतिहासविज्ञों तथा विशारदों का मानक बन निखरेगा।

डॉ. भाटी के प्रकाशन साहित्य की सूची उनकी उम्र से कहीं अधिक दस्तावजों की दास्तान लिए है। प्रस्तुत 'राजस्थान के ऐतिहासिक दुर्लभ ग्रंथों का अनुशीलन' एक बहुआयामी वृहद ग्रंथ है जिसका प्रकाशन राजस्थानी ग्रंथागार, सोजतीगेट, जोधपुर ने किया है। ग्रंथ के विविध खण्डों में 75 के करीब ग्रंथों का अनुशीलन जहां अनेक अनुत्तरित शोध प्रश्नों का समाधान देते हैं वहां शोधार्थियों के लिए आने वाले अनंत वर्षों तक की सामग्री का दरसाव कराते हैं।

प्राक्कथन में प्रो. रविकुमार शर्मा ने डॉ. भाटी द्वारा किये गये शोध कार्यों के लिए सत्यार्थ ही लिखा कि डॉ. भाटी की प्रत्येक कृति में, प्रत्येक सम्पादन में प्रामाणिकता, सारगर्भिता, मौलिकता तथा निष्पक्षता और पूर्ण विश्लेषण क्षमता रही है। उन्होंने कहीं भी, कभी भी चरित नायकों को अतिशयोक्तिपूर्ण महिमामंडित नहीं किया और न ही चरित नायकों के विरोधियों को बेवजह लांछित किया है।

डॉ. भाटी ने अपने लेखन द्वारा अनेक लोगों को इतिहास की अनुरक्ति दी। अनेकों में इतिहास ग्रंथों को पढ़ने की जिज्ञासा पैदा की। अनेकों को अपने वंशजों द्वारा किये गये पराक्रमशील कार्यों को प्रकाशित करने का सम्बल दिया और अनेकों को अपने पास संग्रहीत सामग्री को जनोपयोगी बनाने की प्रेरणा दी। जिस श्रम, निष्ठा, समर्पण और साधना से स्वत: प्रेरित हो वे अपने कार्य में अभी भी आकंठ अहर्निश बने हुए हैं, शायद ही कोई उनकी जोड़ का अन्य इतिहासकार उभरा हो। कई संदर्भों में, कर्नल टॉड ने जो मार्ग अनुसृजित किया, उसे भी डॉ. भाटी ने काफी पीछे छोड़ दिया है।

लोक का रेखांकन करती मड़ई-2016 :

एक ओर जहां छोटी-छोटी पत्रिकाएं भी कीमती मूल्य देकर इतराती रहती हैं वहां 'मड़ई' जैसी पत्रिकाएं रावत नाच महोत्सव समिति, विलासपुर (छत्तीसगढ़) से प्रतिवर्ष नियमित और उतनी ही स्तरीय सामग्री से सजधज कर समयबद्ध बनी हुई है। इसका सर्वाधिक महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि यह निशुल्क वितरण के लिए है जो लोकसाहित्य के ख्यात लेखकों के साथ जुड़कर प्रासंगिक बनी हुई है। पत्रिका के सम्पादक डॉ. कालीचरण यादव द्वारा अब तक मड़ई के 30 अंक प्रकाशित हो चुके हैं जो लोकसाहित्य-संस्कृति के क्षेत्र के विद्वानों, शोधछात्रों तथा लोकविज्ञों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुए हैं।

प्रस्तुत अंक विविध प्रांतों, जातियों तथा विधाओं में प्रचलित लोकसंस्कृति साहित्यपरक विशिष्ट सामग्री से सम्बंधित आलेखों से सज्जित है। प्रारंभ में कुछ आलेख लोककथाओं के स्वरूप, हमारा समय और लोककलाएं, लोक की बोली और बाजार, भाषिक संरचना, जनजीवन में बहता पानी, लोकजीवन में घर की खोज, लोक से दूर होते लोग जैसे विषयों पर बड़ी वैचारिक सामग्री लिए हैं। एक साक्षात्कार भी दिया गया है जो लोककला और संस्कृति के मर्मज्ञ लेखक भालचन्द्र जोशी से डॉ. राधेश्याम कर्मा की बातचीत से सम्बद्ध है।

लूर बहुत दूर-सुदूर :

कुछ पत्रिकाएं ऐसी हैं जो अपना यह एहसास भूला देती हैं कि वे निकल रही हैं और फिर निकल आती हैं। उनमें 'लूर' का नाम लिया जा सकता है। हालांकि वह जब भी निकली, यादगार बनकर निकली। उसका हर अंक ही विशेषांक होकर निकला। लूर के पुराने अंकों में लूर नृत्य गीत, मीरां, लोकदेवता तेजाजी, लोरी, बन्ना तथा बन्नी लोकगीत, बंजारा, वर्षा, श्रम लोकगीत उल्लेखनीय बनकर निकले हैं।

प्रस्तुत कालबेलिया विशेषांक जनवरी-दिसम्बर-2011 का विशेषांक है। आजकल पुस्तकों के साथ-साथ पत्र-पत्रिकाओं में भी सर्वाधिकार

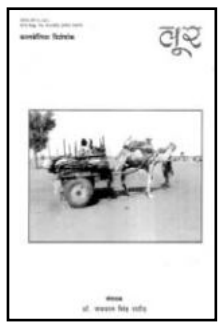

सुरक्षित रहता है। लूर के लिए भी लिखा गया है- प्रकाशित सामग्री के उपयोग हेतु लेखक, अनुवादक एवं सम्पादक की स्वीकृति आवश्यक है।

मजे की बात है कि कुल 196 पृष्ठीय सामग्री लूर के सम्पादक डॉ. जयपालसिंह राठौड़ तथा उनके अग्रज डॉ. महीपालसिंह राठौड़ द्वारा ही लेखबद्ध की गई है। कालबेलिया समाज और संस्कृति तथा कालबेलिया लोकगीतों में जीवन संदर्भ से जुड़े 8-10 पृष्ठीय आलेख तो डॉ. महीपालसिंह राठौड़ द्वारा ही लिखे गये हैं। शेष सामग्री कालबेलिया गीत से सम्बन्धित है जिसके प्रस्तोता दोनों भाई हैं। ये गीत लोकगीत हैं जिन पर किसी का एकाधिकार नहीं होता, सर्वाधिकार होता है। ये गीत अन्य जातियों में भी प्रचलित हैं। अच्छा होता प्रत्येक गीत का हिन्दी भावार्थ और विशिष्ट शब्दों के अर्थ भी दिये जाते ताकि पाठकों को समझने में सहूलियत रहती। गोपालवाड़ी, चौपासनी, जोधपुर से प्रकाशित यह अंक 200 रूपये मूल्य का है।

-डॉ. कहानी भानावत

खोज-खबर

सन्तान सट्टा

संतान प्राप्ति भी एक प्रकार का सट्टा है। कई परिवारों में आवश्यकता से अधिक संतानें पैदा हो जाती हैं तो कई परिवार संतान नहीं होने पर बड़े दुखी एवं मलीन देखे गये हैं। कहीं केवल लड़कियां ही लड़कियां देखी गई हैं तो कहीं लड़के ही लड़के। इस प्रकार की बेमेल खिचड़ी का कोई हल अभी तक नहीं निकला है। बहुत कम ही परिवार ऐसे मिलेंगे जहां आवश्यकता के अनुरूप ही संतानें हुई देखी गई हैं। यहां यह भी बता देना आवश्यक है कि कभी कम संतान का होना अच्छा नहीं समझा जाता था।

मामा से मंगल का बोध :

किसी बच्चे के जन्म के मंगल मोरे होते हैं तब बच्चे का मामा उसके लिए सुनार से तांबे का मंगल बनवाता है और एक पांव से खड़ा रहकर उसके गले में बांधता है। पागड़ी मंगल वाले बच्चे की शादी के लिए चूंदड़ी मंगल वाली लड़की की आवश्यकता होती है। बच्चों के कान बहने पर मामे की ओर से कथीर की घूघरी घड़वाकर बांधी जाती है। इसी प्रकार कुछ बच्चे डूंटी वाले न होकर डूंटे वाले होते हैं।

ऐसी स्थिति में मामा उस पर अपने पांव का सात बार अंगूठा लगाता है, इससे कहते हैं डूंटा बैठ जाता है। बहुत से बच्चों के मुंह से लार टपकती रहती है तब मामा अपने कंधे पर कोथला लेकर आता है और उससे उसका मुंह पोंछने का उपक्रम करता है।

बच्चों से जुड़े टोटके :

बहुत सी औरतों के बच्चे होने पर वे प्राय: जीवित नहीं रहते। ऐसी हालत में बच्चे के नाक में नथ पहना दी जाती है और उसका नाथू अथवा नाथी नाम रख दिया जाता है। शादी में तोरण चटकाते समय लड़के की नथ उसकी सासु द्वारा खोलाई जाती है और नाथ्ये नारे के नेग के रूप में सवा रूपये से लेकर सवा सौ रूपये तक तोरण पर दिये जाते हैं।

कहीं-कहीं बच्चा होते वक्त जो आंवळ जमीन में गाड़ी जाती है उसके साथ सफेद कोळा अथवा नारियल गाड़ने का टोटका किया जाता है। इसके अतिरिक्त रोड़ी पर भंगी के टोपले में रखकर बच्चे को खींचा जाता है और उसका नाम रोड्या (रोड़ीलाल) अथवा घेंच्या (घींसालाल, खेंचना-घसीटना-घींसना) रख दिया जाता है। इन टोटकों के अतिरिक्त उस बच्चे को अमर कूंख वाली स्त्री का स्तन भी दिलाया जाता है। कठिनाई से बच्चा होने की स्थिति में हथ्थीमाता के पगल्ये पानी में गोलकर बच्चे को उसका पानी पिलाया जाता है। कभी-कभी जिस औरत के बच्चे आसानी से होते हैं उसके अंगूठे का पानी भी पिलाया जाता है।

बच्चे जीवित नहीं रहने पर अन्य और भी कई टोटके किये जाते हैं। बच्चों की निश्चित उम्र तक घर के कपड़े नहीं पहनाकर सगेसंबंधियों के कपड़े पहनाये जाते हैं। अंबामाता के नाम की नथ पहनाई जाती है।

बच्चे का जापा अन्यत्र करवाया जाता है। इस स्थिति में जच्चा पूरे वर्षभर अपने ससुराल की देहरी तक नहीं लांघती है। संक्रांति को सकरांत्यों में भी बच्चे को निकाला जाता है। इस विधि के अनुसार गोबर के बड़े-बड़े उपले बनाकर उनके बीच में से छेदकर उनमें से बच्चे को निकाला जाता है। साधु-संतों के पहनने का कपड़ा प्राप्त होने पर बच्चे को पहनाने-ओढ़ाने से भी बच्चे जीवित रहते हैं।

बच्चे नहीं होने पर कई प्रकार के देवी-देवताओं की बोलमाएं भी बोली जाती हैं और उनके नामों पर बच्चों के नाम रखे जाते हैं। भेरु, अंबा, तुलसी, चतरभुज आदि इन्हीं देवी-देवताओं के प्रतीक हैं। संतान का संतुलन भी ठीक होना आवश्यक है।

केवल लड़कियां ही लड़कियां या लड़के ही लड़के होना भी ठीक नहीं। लड़कियों की अधिकता के फलस्वरूप उनके ऐंडे बेंडे नामकरण इस बात के प्रतीक है कि लोकजीवन ने कभी भी लड़कियों की अधिकता स्वीकार नहीं की। धापू, अणछाई, रोड़ी आदि नाम भी इस बात की पुष्टि करते हैं।

भदाणा माता का भाव

राजेन्द्रसिंह बारहठ ने मूठ के झपेटे में आये लड़के की आंखों देखी घटना का बखान करते बताया कि कोटा से पांच किलोमीटर की दूरी पर भदाणा माता का प्रसिद्ध स्थान है जहां फंद फांदे में आये व्यक्तियों का शर्तिया इलाज होता है। भारतीय लोककला मण्डल में एक अक्टूबर 1982 को बैठेठाले की गपशप में राजेन्द्र बाबू बोले कि माता का भाव लाने से पूर्व भोपा जोत से अपनी आंखों में काजल डालता है। टींकी करता है। सहायक हजूरिया उसे साड़ी ओढ़ाता है।

भील भोपा भाव लाते ही जोत में आंखें कर वहां उपस्थित जातरियों में से पुकार देता है। बोला- झालावाड़ की तरफ से कौन आया है? यह सुनते ही एक बारह वर्ष का लड़का उठ भोपे के सामने उपस्थित होता है। कई दिनों से इसके पूरे शरीर में जलन है। जगह-जगह खूब इलाज कराया पर आराम नहीं पड़ा। भोपा सुनाता है- छोरा मूठ में आ गया है। दरअसल मूठ किसी दूसरे पर फैंकी गई थी मगर वह तो बच गया और यह झपट में आ गया सो पूरे डील में जलन लगी हुई है। सुनने वाले चकित रह जाते हैं।

भोपा यह कहते ही उसके दोनों पांवों के घुटने चूसता है और मुंह में आये उड़द को फूंक मार बाहर फैंकता है। इसके बाद दोनों हाथों की कुहनियां चूसता है। यहां से भी उसके मुंह में उड़द आये जिसे वह बाहर डालता है। फिर सामने थरपित भैरू प्रतिमा की ओर इंगित कर उसे बोतल की धार देने को कहता है। बालक के साथ आया एक व्यक्ति तत्काल पास के भदाणा गांव जाकर शराब की बोतल लाकर भैरु पर धार देता है। इससे लड़के की बेचैनी जाती रहती है। वहां उपस्थित जातरू यह चमत्कार देख भदाणा माता की जय बोल श्रद्धाभिव्यक्त करते हैं।

लड़के का पिता अपार खुशी लिए देवी के प्रति बार-बार नतमस्तक होता है। भोपा वहां उपस्थित सभी के लिए सवा मण आटे का प्रसाद कर जीमाने को कहता है। कबूतरों को दाणा डालने को कहता है और एक माह बाद पुन: हाजिर होने को कहता है। लड़के का पिता सम्पन्न राजपूत घराने का है। राजेन्द्र बाबू का परिचित है। महीने भर बाद लड़के को देवी के दर्शनार्थ ले जाया जाता है। इस बार चौकी पर भोपा लड़के की गर्दन के अनुभाग को चूस कर उड़द निकाल फैंकता है। कहता है, अब यह लड़का पूरा ठीक है। एक बाल बराबर भी बीमारी नहीं रही। माताजी की कृपा से इसका कोई बाल बांका नहीं कर सकेगा। सच ही है, माताजी की महिमा अपरम्पार है।

शहर की हलचल

शोर्यगढ़ रिसोर्ट एवं स्पा के स्वयंवर में नये मेन्यू की लांचिंग

डेसर्ट टेबल के साथ पिज्जा शौकिनों के लिये भारतीय पिज्जा नांजा, पश्चिमी प्रभावित भारतीय मिठाई और पारंपरिक एवं फ्यूजन फूड, इण्डियन एण्ड वेस्टर्न प्लेटर को कुरकुरे और ताजे स्वाद का आनंद अब शोर्यगढ़ रिसोर्ट एवं स्पा के स्वयंवर रेस्टोरेंट में आधुनिक प्रस्तुति के साथ उपलब्ध होगा। सोमवार 12 जून को इसके नये मेन्यू की लांचिंग होगी।

शोर्यगढ़ रिसोर्ट एवं स्पा के जनरल मैनेजर रूपम सरकार, जुनियर सू शैफ सुखदेवदास एवं असिस्टेंट फूड एण्ड बेवरेज मैनेजर जसराम चौहान ने बताया कि स्वयंवर रेस्टोरेंट में सोमवार से शुरू किये गये नये मेन्यू में मेहमानों के लिये नये रिफ्रेशिंग डाईनिंग अहसास के साथ उनकी रूचि और स्वाद को खासतौर पर पेश किया है।

उन्होंने बताया कि स्वयंवर में हमारा नया मेन्यू हर अतिथि का सत्कार करने में पीछे नहीं है। सभी का खास ध्यान रखकर हमारे विशेष आकर्षण 'डेसर्ट टेबल' पर मिठाइयों की अनोखी लाईव प्रस्तुति का आनंद लिया जा सकेगा। वहीं उदयपुराईट्स और आने वाले मेहमानों के लिये भारतीय पिज्जा नांजा भी अभूतपूर्व स्वाद देने वाला होगा। खाने के शौकिनों के लिये इण्डियन और वेस्टर्न प्लेटर भी स्वाद से भरपूर होंगे। इसके अलावा परंपरागत और पश्चिमी आकर्षक और स्वादिष्ट व्यंजनों में बर्मीस ख्वास्वे सूप, बीट रूट एण्ड स्मोक्ड चीज़ सलाद, मेक एण्ड चीज़ पोटेटो नौका, सब्ज शामी के कबाब, जापानीज़ टेम्पूरा, केसर कुंभ की बिरयानी, जर्दा पुलाव, रसमलाई चीज़ केक एवं बेक्ड योगर्ट पहली बार प्रस्तुत होंगे जो आगन्तुक मेहमानों को खूब पसंद आयेंगे। देशी विदेशी स्वाद को परंपरा के साथ विशेष तौर पर तैयार किये गये इस मेन्यू को अनुभवी और अपनी अपनी डिश में एक्स्पर्ट शेफ द्वारा तैयार किया गया है।

'सपना, बचत, उड़ान' के तीसरे चरण की शुरुआत

सेस्मे वर्कशाप इंडिया और मेटलाइफ फाउंडेशन ने झारखंड में 'सपना, बचत, उड़ान : आर्थिक बल, हर परिवार का हक' नामक अपनी

मल्टीमीडिया पहल के तीसरे चरण की शुरूआत की। इस चरण में कॉमिक स्ट्रिप्स, डिजिटल गेम, गाने और रेडियो एपिसोड की श्रृंखला जैसी नयी आकर्षक शैक्षणिक सामग्रियों को शामिल किया गया है। गली गली सिम सिम रेडियो एपिसोड का उदयपुर में एआईआर एफएम 1125 किलो हर्ट्ज पर मंगलवार और बुधवार शाम 7.10 बजे प्रसारण होता है जिसमें पसंदीदा पात्रों ग्रोवर, चमकी और एल्मो को बचत करने, साझा करने और दान करने के तरीकों के बारे में सुन सकते हैं। इन एपिसोडों का एआईआर एफएम 1125 किलो हर्ट्ज पर शनिवार और रविवार को रात 8.15 बजे पुन: प्रसारण किया जाता है।

सेस्मे वर्कशॉप इन इंडिया की प्रबंध निदेशक साश्वती बैनर्जी ने कहा कि सपना, बचत, उड़ान के तीसरे चरण में बच्चों को सूचित विकल्प चुनने और योजना बनाने के बारे में सिखाने के लिए एक नया डिजिटल गेम, चुनो और बुनो को शुरू किया गया है। इसके अलावा इसमें एक और नया तत्व 'चाहतों का तालाब' है, जिससे बच्चों को अपनी आकांक्षाओं की पहचान करने में मदद मिलती है- बड़े होने पर वे क्या बनना चाहते हैं - और इसलिए, उन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए उसी प्रकार से योजना बनाते हैं। बच्चे 'दोस्तों की जोड़ी, 'करें चाहत पूरी' और 'घर पर बनायें, पैसे बचाए' जैसे नए कॉमिक स्ट्रिप्स का भी आनंद ले रहे हैं। सपना, बचत, उड़ान पहल के माध्यम से हमारा लक्ष्य परिवारों को वित्तीय समावेशन से जुड़ी रणनीतियां और कौशल प्रदान करना है।

उन्होंने कहा कि हम दिनचर्याओं और प्रथाओं में वित्तीय सशक्तिकरण से संबंधित गतिविधियों को शामिल करने के लिए हमारे दृष्टिकोण के माध्यम से 90,000 बच्चों तक सफलतापूर्वक पहुंच गए हैं और बच्चों और वयस्कों के बीच खुली बातचीत और संपर्क की सुविधा प्रदान करते हैं।

मेटलाइफ फाउंडेशन के एशिया के क्षेत्रीय निदेशक कृष्ण ठाकर ने कहा कि हम कार्यक्रम के पहले दो चरणों की सफलता को देखकर खुश हैं। तीसरा चरण माता-पिता और बच्चों के बीच खर्च करने, बचत करने और साझा करने के बारे में सूचित विकल्प चुनने की दिशा में आगे बढ़ने पर जोर देता है और उन्हें उनके वित्तीय और गैर-वित्तीय लक्ष्यों का एहसास करने में सहायता कर सकता है।

जन्मदिन की बधाई

दैनिक भास्कर के ख्यातनाम फोटोजर्नलिस्ट ताराचंद गवारिया के सुपुत्र पार्थ का 31 मई को जन्म दिवस बड़े हर्षोल्लास से सम्पन्न हुआ।

उच्चस्तरीय परीक्षा परिणाम

सेंट लॉ पब्लिक सीनियर सैकण्डरी स्कूल के छात्र तुषार पुत्र आशिष-धीरा देवपुरा ने सीबीएससी दसवीं बोर्ड परीक्षा परिणाम में 10 सीजीपीए अंक प्राप्त किये। उल्लेखनीय है कि तुषार के पिता आशिष देवपुरा दवा व्यवसायी तथा माता धीरा देवपुरा वहीं स्कूल में उपप्रधानाचार्य हैं।

गर्दन की हड्डी का सफल ऑपरेशन

पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ़ मेडिकल साइंसेस (पीआईएमएस) हॉस्पिटल, उमरड़ा में चिकित्सकों ने एक युवक के गर्दन की हड्डी का सफल ऑपरेशन किया है।

पीआईएमएस के चेयमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि चित्तौड़गढ़ निवासी 22 वर्षीय पवन जाट की सड़क दुर्घटना में गर्दन की हड्डी टूट गई थी। उसे स्थानीय अस्पताल में ले जाया गया पर नाजुक स्थिति को देखते हुए मरीज को पीआईएमएस हॉस्पिटल में स्थानान्तरित किया गया। परिजन पवन को लेकर पीआईएमएस हॉस्पिटल आए और न्यूरोसर्जन डॉ. सुभाष जाखड़ को दिखाया। जांच में पता चला कि मरीज के गर्दन के नीचे का हिस्सा बिलकुल भी काम नहीं कर रहा था और श्वसन क्रिया भी धीरे-धीरे निश्क्रीय हो रही थी। इस पर मरीज को तुरंत वेंटिलेटर पर रखा गया। श्वसन क्रिया समान्य होने पर देर रात डॉ. सुभाष जाखड़ के साथ डॉ. योगेश, डॉ. राजेन्द्र, डॉ. प्रियंका की टीम द्वारा उसका ऑपरेशन किया गया। ऑपरेशन के बाद उसे गहन चिकित्सा कक्ष (आईसीयू) मे 72 घंटों तक रखा गया। डॉ. जाखड़ ने बताया कि इस तरह के ऑपरेशन मे मरीज के स्वस्थ होने की संभावना कम होती है। मरीज अब स्वस्थ है। श्वसन क्रिया सामान्य है और गर्दन के नीचे का हिस्सा भी काम कर रहा है।

केनरा बैंक और द न्यू इंडिया एश्योरेंस कंपनी लि. में साझेदारी

देश के सबसे बड़े सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में से एक केनरा बैंक और देश की सबसे बड़ी जनरल इंश्योरेंस कंपनी द न्यू इंडिया एश्योरेंस कंपनी लि. ने एक कॉर्पोरेट एजेंसी एग्रीमेंट पर हस्ताक्षर किए। इस एग्रीमेंट के तहत न्यू इंडिया एश्योरेंस कंपनी लि. के साधारण बीमा से जुड़े प्रॉडक्ट्स का वितरण केनरा बैंक के देशभर में फैले 6000 से अधिक शाखाओं के विस्तृत नेटवर्क के माध्यम से किया जाएगा। बैंक की तरफ से ललित वैद, महाप्रबंधक, विपणन और आरआर विंग ने कॉर्पोरेट एजेंसी समझौते पर हस्ताक्षर किए, जबकि बीमा कंपनी की तरफ से आर. एम. सिंह, महाप्रबंधक, बैंक एश्योरेंस विभाग ने बैंक और बीमा कंपनी के शीर्ष अधिकारियों की मौजूदगी में समझौते पर हस्ताक्षर किए। इस रणनीतिक समझौते के तहत, न्यू इंडिया एश्योरेंस कंपनी लि. केनरा बैंक के ग्राहकों को अपने प्रमुख साधारण बीमा प्रॉडक्ट उपलब्ध कराएगा। मोटर बीमा, होम इंश्योरेंस, स्वास्थ्य बीमा, ट्रैवल इंश्योरेंस और फार्मा बीमा, मरीन इंश्योरेंस और इंजीनियरिंग इंश्योरेंस जैसे उत्पादों की व्यापक रेंज केनरा बैंक की शाखाओं के माध्यम से उपलब्ध होगी। साझेदारी का उद्देश्य उच्च प्रतिस्पर्धी दरों पर केनरा बैंक के ग्राहकों को अपनी श्रेणी में सर्वोत्तम सामान्य बीमा उत्पादों को उपलब्ध कराना है। बैंक और बीमा कंपनी का व्यापक शाखा नेटवर्क बीमा की सुविधा और पॉलिसियों की बिक्री उपरांत सुगम सेवा की सुविधा प्रदान करेगा।

'सेहत का चार्जर' अभियान शुरू

टाटा सॉल्ट ने आज उदयपुर में 'सेहत का चार्जर' नामक अभियान की शुरूआत की। ब्राण्ड के इस वादे को 'देश की सेहत, देश का नमक' को ध्यान में रखते हुए, टाटा सॉल्ट ने यह अभिनव अभियान की शुरूआत की है, जिसके माध्यम से गर्मियों के दौरान निर्जलीकरण (डीहायड्रेशन) होने पर नमक और पानी मिलकर किस प्रकार उसका मुकाबला कर सकते हैं के बारे में लोगों में जागरूकता लाना है।

टाटा केमिकल के हेड-मार्केटिंग कंज्यूमर प्रोडेक्ट सागर बोके ने कहा कि इस अभियान के पीछे प्रमुख उद्देश्य हमारे 'देश के स्तम्भ' माने जाने वाले यातायात पुलिस कर्मी, ऑटो रिक्शा चालक, बस चालक और ग्राहक जो कि इस गर्मी के मौसम में अपनी रोजी-रोटी के लिए भागमभाग में लगे रहते है, उन्हें एक प्रकार का विश्राम पहुचाना है। अत्यधिक गर्मी से शारीरिक ऊर्जा का क्षय होना, थकान और सुस्ती के कारण शारीरिक परिश्रम अधिक हो जाता है। इस जरूरत को ध्यान में रखते हुए टाटा सॉल्ट ने इसके उपभोग करने को आसान, सही समय पर समाधान पेश किया ताकि ग्राहक हाइडेऊटेड और ऊर्जावान बने रह सकें।

इसके लिए लोगों की भीड़ एकत्र की गई जहां टाट सॉल्ट ने विशेष 'एनर्जी शॉट्स' वितरित किए यह एनर्जी ड्रिंक टाटा सॉल्ट और प्यूरिफाइड पानी से मिला कर बनाया गया है। 'सेहत का चार्जर' न केवल सोडियम और आवश्यक खनिज की कमी को दूर करता है अपितु शरीर में पानी को सोखने की स्थिति में भी सुधार लाता है, नतीजतन ग्राहक ऊर्जा क्षरण या हाइपोनेट्रिमिया की कमी से पीडित नहीं रहते।

इन शॉट्स का वितरण टाटा सॉल्ट बड़ी-बड़ी केनोपी के माध्यम से किया गया, जो कुम्हारों का भट्टा, सूरजपोल रोड़ पर लगाई गई ताकि यहां आने वालों को 'शॉट्स' के साथ ही छाया भी मिल सके। इस अभियान का दोहरा उद्देश्य था हाइड्रेटेड बने रहना और दोपहरी के समय सूरज की गर्मी से बचे रहना।

मेवाड़ पर केन्द्रित पत्रिका 'विरासत' का विमोचन

जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय के संघटक इतिहास एवं संस्कृति विभाग की शोध पत्रिका 'विरासत' का विमोचन कुलपति प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत, प्रो. नीलम कौशिक, प्राचार्य प्रो. सुमन पामेचा, पीजीडीन प्रो. जी. एम. मेहता, प्रो. रश्मि बोहरा, डॉ. हेमेन्द्र चौधरी ने किया।

सहायक आचार्य डॉ. हेमेन्द्र चौधरी ने बताया कि इस अंक में मेवाड़ के स्वतंत्रता आंदोलन को रेखांकित कर प्रकाशन किया गया है। पुस्तक में राजस्थान के ऐतिहासिक एवं धार्मिक स्थल, वास्तु, कला, मेले, लोकनृत्य, प्रमुखप्रथाएं, हवेलियां व किलों के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई तथा मेवाड़ी विवाह संस्कार में प्रचलित रात्रि जागरण, परम्परा, व लोक संस्कृति के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई है।

एक मुट्ठी आटे से.....

(पृष्ठ दो का शेष)

नरसी के वहां भोजन करने वालों की ही भीड़ नहीं रहती, मांगने वाले भी बने रहते। भोजनोपरांत उनके वहां मांगने वालों की लंबी लाईन लगती तब नरसी गादी पर बैठ उसके नीचे से जो राशि हाथ लगती, प्रत्येक को दान स्वरूप देते रहते। यह राशि एक रूपया, दो रूपया से लेकर सौ रूपया तक होती। गादी से उठने के बाद जब वे अपने पलंग पर जाते तब उनके पास कुछ नहीं रहता।

कैलाशजी में भी मुझे नरसीजी का आत्मांश ही लगता है। मुफ्त भोजन इनके यहां भी चलता है और साधु-संतों का निरंतर आवागमन एवं कथा-श्रवण होता रहता है। दिव्यांगों की सेवा तथा जन्मजात दिव्यांगों के जो निशुल्क ऑपरेशन यहां किये जाते हैं उसके लिए न केवल देश के प्रत्येक अंचल से रोगी बल्कि विदेश तक के रोगी यहां लाभान्वित हो रहे हैं। उनके लिए आर्थिक मदद देने वालों की भी कमी नहीं है।

ऐसा प्रतीत होता है कि नरसी ने अपने काल में, अपने हाथों से जो आर्थिक सेवा की थी उतने ही हाथों की लाईन कैलाशजी को सहयोग देने वालों की लगी रहती है। वे सिद्धि के दातार थे तो ये भी कम सिद्धि लिए नहीं हैं। अन्नपूर्णा और लक्ष्मी इन पर भी टूटमान हैं। कैलाशजी को देने वालों की कमी नहीं है। कई दानदाता ऐसे भी हैं जो अनाम रहकर सहयोग करते हैं। वैसे भी दाता मिलना बहुत दुष्कर है। जिन्हें मिल जाते हैं वे बड़े भाग्यशाली हैं। कहावत है-

शतके जायते शूर: सहस्त्रेषु व पंडित:
वक्ता दश सहस्त्रयेषु, दाता भवति वा न वा।

अर्थात् शूरवीर सौ में से कहीं कोई होता है। पंडित उससे भी मुश्किल हजारों में कोई होता है। वक्ता तो दस हजार व्यक्तियों में से ही कोई एक दुर्लभ होता है और दानी तो असंभव ही है। कहीं कोई मिल जाय तो मिल जाय।

निस्वार्थ सेवा करने वालों की अदृश्य शक्तियां भी सहयोग करती हैं। बहुत सारी चीजें रहस्यमय लगती हैं। देवमंदिरों, तीर्थस्थलों में पग-पग पर कई तरह के चमत्कार, रहस्य और अलौकिक प्रसंग देखने को मिलते हैं। नाथद्वारा के श्रीनाथजी मंदिर में प्रतिदिन ही ऐसी कई भेंटें प्राप्त होती हैं जिनके भेजने वाले अनाम होते हैं। पार्सलों पर पाने वाले श्रीनाथजी तो भेजने वाले भी श्रीनाथजी लिखा रहता है।

कैलाशजी ने मुझे उनके संस्थान के कई कक्ष खोल-खोलकर बताये। कुछ में सिलेसिलाये कपड़े ठूंसे हुए थे तो कुछ में तेल-घी से भरे पीपों की पंगतें थीं। ऐसे हॉल भी बताये जिनमें अनाज, दाल, शक्कर आदि खाद्य पदार्थों की बोरियां रखी हुई थीं। कहां से आता है यह सब! कौन लाता है यह सब! कैसे कोई चीज पड़ी-पड़ी बढ़ती जाती है! खर्च करने पर भी खुटती नहीं है!!

जलाराम सी जीवट शक्ति :

जलाराम की तरह कैलाश 'मानव' भी अपने फन के धुन-धनी हैं। कोई भी चीज मन में धार लेते हैं तो उसे पूरी कर ही दम लेते हैं। कार्य में बाधा आने पर वे हिम्मत नहीं हारकर मन ही मन संकल्प कर लेते हैं। ऐसे संकल्प उन्होंने कई बार किये और हर बार पूरे हुए। कभी हार नहीं झेली। वे कहते हैं, कोई न कोई शक्ति है जो सामर्थ्य देती है। सहयोग करती है। संबल बनाती है अन्यथा उनकी क्या बिसात कि वे एक के बाद एक, कई काम ऐसे उठाते रहते हैं जो सामान्य नहीं होते। तब वे समर्थ भी नहीं होते पर लगता है, कोई-न-कोई अलौकिक शक्ति उन पर मेहरबान है जिससे वे मन में धारा हर कार्य पूरा कर पाते हैं।

जलाराम अन्तर्ज्ञानी थे। उनके वहां भी जो पहुंचता, भूखा नहीं लौटता। एकबार उनके पास कुछ नहीं बचा। उनके द्वार से साधु भूखे लौटे। इससे जलाराम को बड़ी पीड़ा हुई। उन्होंने मन ही मन संकल्प किया- 'यदि मैं साधु-संतों को ठीक से भोजन नहीं करा पाया तो स्वयं भी भूखा रहूंगा और अपनी देह त्याग दूंगा।'

अपने भक्त की ऐसी कठोर प्रतिज्ञा से भगवान कृष्ण द्रवित हो गये। उन्होंने लक्ष्मीजी से जला को दो रोटियां देने की अर्ज की। लक्ष्मीजी बोलीं- 'अकेली नहीं जाऊंगी मैं। अपन दोनों साथ चलते हैं। मैं थाली बन जाऊंगी।' कृष्ण बोले- 'अच्छी बात है। मैं भील वेश धारण कर लूंगा।' कृष्ण भील बन अपने हाथों में थाली लेकर चले। थाली में दो रोटियां थीं। कृष्ण ने जाकर कहा- 'इस थाली में से दो रोटियां ले-लो। एक स्वयं खाना और दूसरी संतों को खिला देना।' अन्तर्ज्ञानी जलाराम को थाली की बजाय लक्ष्मी दिखाई दी और भील-वेश में कृष्ण। बोले- 'ये रोटियां किसमें लूं।' कृष्ण भांप गये। उन्होंने जला को एक बंद थैली थमा दी। बोले- 'इसे कभी कोई नहीं खोले। जो भी खोलेगा वह सात जन्म तक नर्क में जायेगा।'

यह गुजरात के वीरपुर की घटना है। जलाराम ने वहां लक्ष्मीजी का मंदिर बनवाया और वह झोली उसमें लटका दी। मंदिर में पीतल से बने बालकृष्ण की भव्य प्रतिमा भी बनवाई। कृष्ण अपने हाथों में लड्डू थामे बड़े शोभाजनक लग रहे हैं। उस काल से वहां साधु-संतों तथा दर्शनार्थियों का तांता लगा रहता है। आज भी वही स्थिति बनी हुई है। मैंने भी उस मंदिर में दर्शन किये और सभी के साथ भोजन-प्रसाद ग्रहण किया है। कपड़े की वह झोली भी देखी जिसे कोई नहीं छूता। किसी को पता नहीं, उस झोली में क्या है! यहां क्यों, कब से लटकी हुई है और उसका क्या रहस्य है!!

साधु पुरूष कैलाशजी :

कैलाश 'मानव' प्रकृति से साधु पुरूष ही हैं। उनका पूरा जीवन परिवेश और आचरण भी साधुमय है। देश के प्रत्येक प्रांत और उन प्रांतों के मुख्य शहरों-कस्बों में उन्होंने नारायण सेवा संस्थान की शाखाएं खोल रखी हैं। हर जगह उन शाखाओं के अध्यक्ष हैं और प्रतिवर्ष उन सबसे मेलमिलाप की दृष्टि से सद्भावना सम्मेलन का आयोजन किया जाता है। अच्छे कार्य करने वालों का सम्मान किया जाता है। स्नेह मिलन तथा व्यसन मुक्ति रैलियों का आयोजन किया जाता है। समय-समय पर पोलियो शिविर तथा असहायों के लिए अन्य शिविर आयोजित किये जाते हैं। दिव्यांगों के विवाह कराने की उन्होंने एक अच्छी परम्परा शुरू की है।

दीया तले प्रकाश : कमलाजी अग्रवाल

कहा गया है - प्रत्येक सफल व्यक्ति के पीछे एक महिला होती है। कैलाश 'मानव' निर्विवाद रूप से उन सफल व्यक्तियों में हैं, जो पीड़ित मानव की सेवा के पर्याय बने हुए हैं। यद्यपि मानव अपनी सफलता का श्रेय उन दानी भामाशाहों, हितैषियों और शुभचिन्तकों के प्यार और सहयोग को देते हैं जिनके सहयोग एवं संबल से वे इस क्षेत्र में रम सके किंतु असल श्रेय पाने की अधिकारी उनकी सहधर्मिणी कमलाजी अग्रवाल भी हैं जो संस्थान परिवार के सदस्यों और साधकों में स्नेह सहयोग और सहकार की त्रिवेणी बनी हुई हैं। वे त्याग, संघर्ष और सेवा के क्षेत्र में हर पल, हर कदम कैलाशजी के साथ लयबद्ध रही हैं। उन्हीं के भरोसे कैलाशजी गृहस्थी के दायित्वों से मुक्त हो सेवाकार्यों में जुट सके।

एक मुट्ठी आटा पृष्ठभूमि में कमलाजी का योगदान नहीं होता तो कैलाशजी एक कदम भी आगे नहीं बढ़ पाते। सर्दी, गर्मी या बरसात की असुविधाओं को नकारते हुए प्रतिदिन 3 बजे प्रात: उठकर रोगियों के परिचारकों के लिए खाना बनाना, परिजनों की सेवा, अतिथियों का स्वागत-सत्कार, बच्चों की पढ़ाई और गृहस्थी के अन्य कार्यों का सम्पादन। इन सबमें कमलाजी ने जिस धैर्य, साहस तथा कौशल का परिचय दिया वह बेमिसाल है। निराश्रित बालगृह के बालक हों या फिर बिना पूर्व सूचना के संस्थान में आने वाले अतिथियों की आवभगत ; निष्काम भाव से संस्थान की प्रथम महिला के रूप में कमलाजी सदैव कर्तव्य पथ पर आगे रहीं हैं। दिव्यांगों के सामूहिक विवाह समारोहों में तो उनका उत्साह एक अविस्मरणीय सुखद अनुभूति है।

डॉ. इंदुशेखर बने अकादमी के अध्यक्ष

राजस्थान साहित्य अकादमी के अध्यक्ष पद पर 7 जून को डॉ. इंदुशेखर ने कार्यभार ग्रहण किया। इनके साथ ही राज्य सरकार ने बलवीरसिंह 'करुण' एवं डॉ. मथुरेशनंदन कुलश्रेष्ठ को सरस्वती सभा का सदस्य मनोनीत किया।

बकौल डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल अकादमी के नये अध्यक्ष से उम्मीद है कि वे साहित्यकारों की बिरादरी को पूरा मान देते हुए अकादमी का खोया वैभव लौटाने के लिए काम करेंगे। शब्द रंजन की बधाई।

पुरुष जेल में पहली महिला डीआईजी प्रीता भार्गव

केन्द्रीय कारागृह उदयपुर की अधीक्षक प्रीता भार्गव पुरुष जेल में रहने वाली देश की पहली महिला डीआईजी बनीं। उन्हें अधीक्षक पद से अजमेर कोटा उदयपुर रेंज की जेल उपमहानिरीक्षक के पद पर पदोन्नत किया गया है। वे पिछले 33 वर्षों से जेल सेवाओं से जुड़ी हुई हैं। उल्लेखनीय है कि प्रीता भार्गव एक सुधी साहित्यकार हैं। कविताएं उनका प्रमुख सृजन-सवर है। एक सफल कवयित्री के रूप में उनकी कई कविताओं और काव्य पुस्तकों ने साहित्यिकों का ध्यान आकृष्ट किया है। बधाई।

लोकभाषाओं में.....

(पृष्ठ तीन का शेष)

उसके टेक पद पर सभी कामगार समवेत अलाप लगाते जाते थे। 'हुड़को' नाम के वाद्य पर थाप देकर गाने की परंपरा थी। इसलिए गायक को हुड़किया कहा जाने लगा। इससे गुड़ाई काम जल्दी-जल्दी निपट जाता था और गाते-बजाते गाथा सुनते-सुनाते वे दिन यादगार बन जाते थे। विकास की लहर में मोटा अनाज मडुवा, झिंगोरा, गहत, मट और चीणा-गनारा बोना लोगों ने कम कर दिया।

वहां कंट्रोल की दुकान में राशन मिलने लगा और लोग पढ़-लिखकर नौकरियों में जाने लगे तो उक्त प्रथा एकदम ही बंद हो गई। वे लोकगायक जो अक्सर शिल्पकार जातियों के होते थे, मशीन से कपड़ा सीने, फौज में भर्ती होने, मैदानों में आकर होटलों में छोटे-मोटे काम करके दर-गुजर को तवज्जो देने लगे। उसी के साथ वे सारी लोकगाथाएं लुप्त होती चली गई जो गुणेल, भड़ौ, कटकू, पवाड़ा आदि नामों से जानी जाती थीं।

समाज में सामंती ढांचे के चरमराने और पिछड़ी हुई दलित शिल्पी, वनवासी, आदिवासी अस्पृश्य समझी जाने वाली जातियों को समान सबल बनाने की प्रजातांत्रिक और आधुनिक जरूरतों के चलते भी बहुत सी स्थानीय चीजें संरक्षित होने से रह गई हैं। कहार पालकी ढोते हुए चलते थे तो 'कहरुवा' गीत-ध्वनियां कानों में गूंजती थीं। जमींदारों के खेतों में धान रोपती हुई, गेहूं के खेतों में निराई करती हुई भूमिहन कृषक मजदूरिनें 'लगउनी' और 'निरंडनी' विधाओं के गीत गाती थीं। दिन शोषण के थे और अकिंचन, अकिंचन ही बना रहने को विवश था फिर भी वे गाती थीं।

यह निर्विवाद है कि सबसे मुश्किल दिनों के गीत ही सबसे मीठे होते हैं। उन गीतों के संग्रहित न हो सकने का हमें दर्द है। दलितों में, सम्मान, बराबरी, समृद्धि की, भूमिहिनों में मिल्कियत की, शोषितों में शासक होने की महत्वाकांक्षाओं का जगना बहुत अच्छा है परंतु उन बीते युगों के गीत हमारे राष्ट्र की धरोहर हैं। अभी भी वक्त है कि उन भूली-बिसरी विधाओं को हम इकट्ठा करें। ढोलियों के ऋतुरैंण, झुमर्याओं-बाजगियों के चैती पसारा, राईभाटों की विसद वंशावलियों को हमारे लोकसाहित्य के किताबों की विषयवस्तु बनना है।

इसी प्रकार देवीजी के गीत जहां कहीं भी मिलें उन्हें संग्रहित करने की जरूरत है। ये चेचक निकल आने पर शीतलामाता की पूजा-मनौती में गाये जाते हैं। चेचक अब उतना संक्रामक नहीं रहा। उसका करीब-करीब उन्मूलन ही हो गया है। देवी से जुड़े होने से इन गीतों की उम्र लंबी है ठीक वैसे ही जैसे जातीय गीतों की लंबी होती है। अहीर और गडरियों का 'विरहा', चमारों का 'निगुर्ण' ऐसे गीत हैं।

इन्हें अभी भी यदाकदा सुना जा सकता है परंतु वक्त इनका भी जा रहा है। 'धोबिया' विधा के गीत तो उस व्यवसाय के जीते जी ही अलविदा कह गये। उन्हें खत्म करने में रेडियो की भूमिका प्रमुख रही। रेडियो का पोर्टेबल संस्करण ट्रांजिस्टर निकला। उसमें विविध भारती और सीलोन के प्रोग्रामों में सुमधुर फिल्मी गीत प्रसारित होने लगे। धोबी धुलाई के वस्त्रों के बोझों के साथ ट्रांजिस्टर को भी गधों पर लादकर घाटों पर ले जाने लगे। उनका गाने का श्रम भी कम हुआ और संगीत के सुरों से धोबीघाट भी गूंजने लगा तो वे लोकगीत मानो बवाल की तरह छूटते चले गए।

उन दिनों तो सिर्फ रेडियो और सिनेमा दो ही व्यवधान आए थे। रेडियो ने धीरे-धीरे लोकजीवन में पैठ बनाई और लोकगीतों की विधाओं को ही नहीं, लोकगायकों को भी प्रोत्साहित किया। उनको प्रोग्राम देने शुरू किये परंतु सिनेमा ने फैशन, अश्लीलता और मारधाड़ ही ज्यादा फैलाई। सिनेमा-संस्कृति लोकजीवन को विद्रूप करने लगी।

अब तो हमारे चारों ओर विश्वव्यापी संचार माध्यमों का मकड़जाला है। लोकसंस्कृतियों पर उनका प्रच्छन्न नहीं, घोषित आक्रमण है। टीवी और इंटरनेट के जरिये उसकी मार घरों के भीतर और व्यक्तियों के खुद के जीवन पर होती है। हमारे खानपान, पहनावे, त्यौहार-उत्सव, पढ़ाई-लिखाई, समाज और परिवारों के ढांचे बदल रहे हैं। नृत्य-संगीत और मनोरंजन के तरीकों में बदलाव आता जा रहा है। पशुपालन, खेती और कुटीर धंधों से जुड़ी हमारी समस्त प्रणालियां ही दांव पर हैं। ऐसे में वाचिक विरासत कब तक बचेगी? लोकभाषाओं में जीवित वाचिक परंपरा की साहित्यधर्मी विधाओं को मटियामेट होते देखते रहना ऐसा ही है जैसे गंगा नदी को कूड़े-कचरे और मल-मूत्र के परनालों में बदलते हुए देखते रहना। हम सबकी जिम्मेदारी है कि अपने-अपने स्तर पर उसकी हिफाजत के लिए जो भी कर सकें, करें। **-समाप्त**

हमारे पास शब्द रंजन है आपके पास और भी बहुत कुछ कृपया सहयोग करें

संरक्षक	**11000/**
विशिष्ट सदस्य	**5000/**
आजीवन सदस्य	**3000/**
शब्दरंजन के सहयात्री	**1000/**
साहित्यिक चौपाल	**500/**
वार्षिक संस्थागत	**300/**
वार्षिक व्यक्तिगत	**250/**

शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।

(**Shabd Ranjan**, UCO BANK, Bhupalpura Branch, Udaipur, a/c no. 18450210000908, IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c)

कृपया रचनाएं ई-मेल से भेजें तो सुविधाजनक शीघ्र प्राप्त होंगी।

shabdranjanudr@gmail.com

डेनिम, ट्राइबल, बनारसी के साथ वेस्टर्न परिधानों में रैंप पर उतरी मॉडल्स

पैसिफिक विश्वविद्यालय की प्रतिभाओं ने किया मोहित

-डॉ. तुक्तक भानावत-

पैसिफिक विश्वविद्यालय के पैसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी एंड मॉस कम्युनिकेशन की ओर से रविवार शाम को सुखाडिया रंगमंच टाउन हॉल में वार्षिक समारोह एल्युमिनेटी-2017 फैशन शो आयोजित किया गया। शो के दौरान देश की ख्यातनाम मॉडलों ने ब्ल्यू रन वे, ग्रेफिटी, पेंटेड विल, इण्डिया एंचांटेड, इण्डियन मेशप और डिजायनर राउण्ड थीप पर कैटवॉक किया।

फैशन शो का शुभारंभ मुख्य अतिथि फैशन डिजाइनर गजल मिश्रा, पाहेर के वित्त सचिव आशीष अग्रवाल, पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी की डायरेक्टर शीतल अग्रवाल, मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. संजीव टांक, उपमुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. राघवेन्द्र राठौड़, न्यू इण्डिया इंश्योरेन्स के शैलेन्द्र गुप्ता, रजिस्ट्रार देवेन्द्र जैन, डॉ. अशोक आदित्य, डॉ. मनु मोदी, एवं डॉ. महेन्द्र सोजतिया ने किया। प्रारंभ में पेसिफिक के विद्यार्थियों ने गणेश वन्दना प्रस्तुत की। अंतर्राष्ट्रीय एवं बॉलिवुड के संदीप धर्मा ने कोरियोग्राफी की। शो के डिजाइनर गगन कुमार थे।

समारोह में सबसे पहले ब्ल्यू रनवे में विद्यार्थियों द्वारा डेनिम फेब्रिक्स से बनाये गये गाउन और फंकी लुक का वेस्टर्न गारमेंट्स के साथ आकर्षक इस्तेमाल किया। ग्रेफिटी राउण्ड में खास तौर पर भारतीय मधुबनी, कलमकारी, ब्लॉक प्रिंटिंग का उपयोग किया जिसमें अलग-अलग राज्यों की खड़ी प्रिंट को शामिल किया गया था। इकत और ट्राइबल प्रिंट्स के साथ चटक रंगों का समावेश फैशन प्रेमियों को लुभा गया।

इसके बाद पेंटेड विल में लम्बे इवनिंग गाउन्स के कलेक्शन में वर्तमान ट्रेंड एवं कॉटन फ्रेबिक से डिजाइन किये परिधानों के साथ मॉडल्स रेंप पर उतरे जिसमें गहरे रंगों का बखूबी उपयोग किया गया था। इंडिया इंचांटेड राउण्ड पीआईएफटी के पूर्व विद्यार्थियों द्वारा निर्मित परिधानों का राउण्ड था जो कि वर्तमान में अच्छी जगहों पर फैशन परिधानों को बनाने का काम कर रहे हैं। इस कलेक्शन में खास तौर पर भारतीय परिधानों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से हेरीटेज और बनारसी फेब्रिक के मिश्रण से नया लुक दिये परिधानों का प्रदर्शन किया गया जिसे दर्शकों ने खूब सराहा।

इसके बाद बच्चों का इंडियन मेशप राउंड हुआ। इसमें स्टूडेंट्स द्वारा तैयार किए गए किड्स स्पेशल ड्रेसेस का प्रदर्शन किया गया। इसमें बच्चों ने उत्साहित होकर हिस्सा लिया। बच्चों के परिधानों को विदेशी लुक के साथ पेश किया गया जिसे नन्हे-मुन्ने मॉडलों ने पारंगत मॉडल्स की तरह पर निभाया।

अव्य अग्रवाल की धमाकेदार प्रस्तुति

रणबंका फिल्म के बाल कलाकार अव्य अग्रवाल ने शो में एबीसीडी फिल्म के गीत बेजुबां पर डांस की धमाकेदार प्रस्तुति दी और रैम्प पर कैटवॉक कर सभी की तालियां बटोरी।

डिजायन राउण्ड में गज़ल मिश्रा के परिधानों को प्रस्तुत किया गया जो राजस्थानी रंग, और जरी गोटे के अद्भुत प्रयोग से तैयार किये गये थे जो कि ब्राईडल थीम पर आधारित था।

सारे राउंड में ज्वेलरी सेटअप और मैकअप को लेकर खासी मेहनत दिखाई दी जिसने दर्शकों को ज्वेलरी में ताजापन का अहसास करवाया। शो के कोरियोग्राफर संदीप धर्मा ने थीम बेस्ड और परंपरागत कोरियोग्राफी के साथ ड्रामा, इमोशन को जीवंत करते हुए लाइट और म्युजिक का शानदार इस्तेमाल किया। जिसमें मॉडल्स रैंप पर वर्तमान दौर में प्रचलित सेल्फी के शौक और पेबी करते हुए नजर आई। डिजाइनर गगन कुमार के निर्देशन में पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी एंड मॉस कम्युनिकेशन के विद्यार्थियों ने लेटेस्ट और ट्रेंडी परिधानों से रू-ब-रू करा फैशन को जीवंत कर दिया। इस दौरान विद्यार्थियों की एक के बाद एक सांस्कृतिक प्रस्तुति ने दर्शकों को झूमने पर मजबूर कर दिया।

इसके बाद पुरूष परिधानों को प्रस्तुत किया गया जो पूरी तरह भारतीय रंग में रंगे हुए थे। परिधानों को खासतौर पर शादी एवं खास अवसरों के लिए डिजाइन किया गया था।

प्रारंभ में पेसिफिक विश्वविद्यालय के वित्त सचिव आशीष अगवाल ने कहा कि उदयपुर में फैशन को लेकर खासा टेलेंट है। जरूरत है तो सिर्फ उसे तराशने की। संस्थान के विद्यार्थियों ने इस समारोह को लेकर एक माह पूर्व ही तैयारी शुरू कर दी थी जो आज रंग लाई है। पीआईएफटी की हमेशा यह कौशिश रहेगी कि वे विद्यार्थियों को बेहतरीन प्लेटफार्म उपलब्ध करायें। मुख्य अतिथि फैशन डिजाइनर गजल मिश्रा ने पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी एंड मॉस कम्युनिकेशन की टीम को बधाई देते हुए कहा कि इस प्रकार के आयोजन निश्चित तौर पर प्रतिभाओं को निखारने में सहायक सिद्ध होंगे और यहां के छात्र छात्राएं फैशन के केरियर में देश और दुनियां में अपना नाम रोशन करेंगे।

प्रिंसीपल इंचार्ज श्रुति सक्सेना ने बताया कि समारोह में बेस्ट स्टूडेंट्स का अवार्ड फरीदा पडिहार, वसंत माली एवं मगाराम को दिया गया। संचालन पीआईएफटी के आसिफ और जाबियाने किया। एल्युमिनेटी-2017 फैशन शो में इंस्टीट्यूट के छात्रों ने शीतल अग्रवाल के निर्देशन में विभिन्न गतिविधियों में अपनी छाप छोड़ी। पेसिफिक विश्वविद्यालय के वित्त सचिव आशीष अग्रवाल, शीतल अग्रवाल एवं अतिथियों ने फैशन शो के दौरान बेस्ट डिजाइनर का पुरस्कार किड्स राउण्ड फर्स्ट ज्योति चौहान, द्वितीय रूबल पंवार, तृतीय आंचल चुघ तथा बेस्ट थीम ग्रेफिटी, पेंटेड वॉल ब्ल्यू रनवे को दिया गया, बेस्ट डिजाईनर का पुरस्कार निर्मला पाटीदार और साबिया खान प्रथम, गौरी सोनी ज्योति खांडेकर को द्वितीय, तृतीय अंशुल पटनी एवं श्रुति पुरोहित, बेस्ट डिजाइनर का पुरस्कार मेल राउण्ड में मनीष पंवार, फरीदा पडिहार, एवं जतीन कपूर को दिया गया वहीं बनारसी इण्डिया एंचान्टेड राउण्ड में प्रियंका गांधी, प्रकाश माली और पिंकी डांगी को क्रमश: प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया। शो में पीआईएफटी फेकल्टी मुकेश कुमार औदिच्य, डिजायनर यशवंतकुमार जैन, आर्किटेक्ट हितेष मिस्त्री, श्रुति सक्सेना, प्रकृति दीक्षित पोरवाल, संगीता सिंघवी, राजेश्वरी लोढ़ा, खूशबू भानावत पोरवाल, फातिमा नाज, कोमल सुखवानी, याशिका दलाल, वेरोनिका कुरेशी, राजेश शर्मा, और प्रकाश शर्मा का विशेष योगदान रहा।

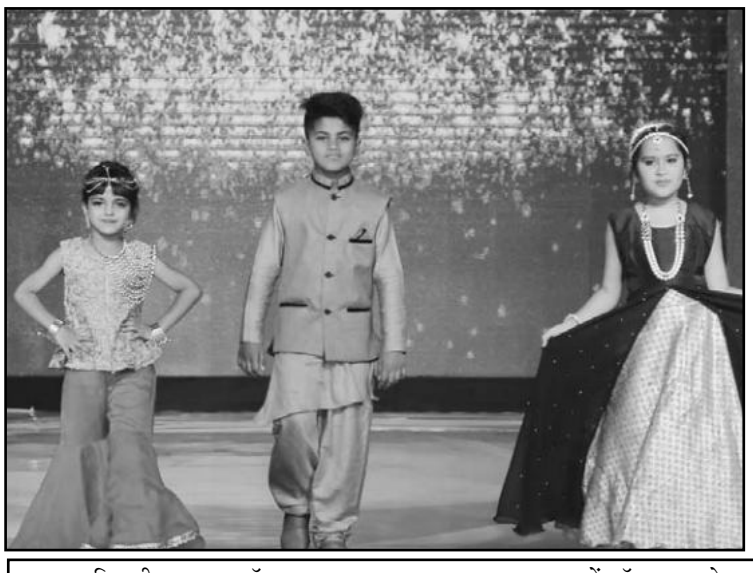

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, टाईटल रजि. RAJHIN17670, Email : shabdranjanudr@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।